अध्याय ४

विभिन्न घरानों की गतें, उनके प्रकार एवं उनकी विशेषता - एक दृष्टिकोन

व्यवहारिक भाषा में 'घराना' शब्द का प्रयोग एवं तबला में 'घराना' शब्द का प्रयोग एक दूसरे से समरूपता दिखाता है। ''घराने के संदर्भ में डॉ. मारुलकर कहते हैं, कि एकाध असामान्य, करतबी एवं सिद्ध कलाकार द्वारा आरंभ की हुई महान आचार-विचार की 'परंपरा' याने 'घराना' है।'' १ परिवार के रीति-रिवाज़, परम्परा, खानदान ये शब्द 'घराना' शब्द से जुड़े हैं। एक कलाकार अपने गुरु से शिक्षा, संस्कार, कला-विचार, कला-प्रस्तुति, अनुशासन, परम्परा आत्मसात कर वही सब अपने शिष्यों को सीखाता है। शिष्य यह विद्या ग्रहण कर फिर अपने शिष्यों को प्रदान करता है। विद्या प्राप्त करनेवाले सभी शिष्यों का समूह अपने घराने की विद्या आगे बढाता है। 'वंशो द्विविधा जन्मना विद्यया च' अर्थात् जन्म और विद्या इन दो प्रकारों से वंश बढता है। संगीत क्षेत्र में इस संकल्पना से विभिन्न घराने निर्माण हुए। संगीत में घराना स्थापित होने के लिए निरन्तर तीन पीढ़ियों की जरूरत होती है। घराने अपनी परम्पराओं को सुदृढ़ रखकर विकासधारा को आगे बढाते हैं। तबले में घराना निर्मिति के लिए स्वतंत्र निकास-पद्धति, स्वतंत्र विचारशैली एवं प्रस्तुतिकरण में निर्धारित अनुशासन की जरूरत होती है।

तबले की विभिन्न वादनशैलियों के कारण तबले में विविध घरानों की संस्थापना हुई और कई पीढ़ियों से प्रस्थापित विविध प्रकार की शैलियों को 'घराना' संबोधन दिया गया है। तबलावादन के क्षेत्र में विभिन्न घरानों के संस्थापक विद्वानों ने विशिष्ट मौलिक रचनाओं के निकास विधि में परिवर्तन करके उन्हें नया स्वरूप प्रदान किया। फलस्वरूप, अपनी निज़ी विशेषताओं के कारण एक दूसरे से पृथक् विभिन्न घरानें अस्तित्व में आए। हर एक घराने का स्वतंत्र वैशिष्ट्य एवं स्वतंत्र वादनशैली है। बाज या वादनशैली का अर्थ है, तबले पर हाथ रखने की पद्धति, दायें-बायें पर विशिष्ट पद्धति से, विशिष्ट क्रियाओं द्वारा, विशिष्ट स्थान पर विशिष्ट उँगलियों से आघात करके

विविध नाद निर्माण करने का कौशल। तबले के घरानों में शैली अथवा बाज अर्थात् बजाने की विशिष्ट पद्धति एवं स्वतंत्र विचारधारा अन्तर्भूत होती है। ''विशिष्ट विचारप्रणाली अर्थात रचना व त्या विचारांना सौंदर्यपूर्णरित्या व अतिशय प्रभावीपणे प्रकट करू शकणारी निकासपद्धती (शैली) यांचा सुरेख मिलाफ म्हणजे घराणे होय.'' २ स्वतंत्र तबलावादन की सामग्री का विकास इन शैलियों तथा घरानों के माध्यम से हुआ है। परम्परा से आई हुई यह तबले की विद्या एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में संक्रमित होकर कई सारी पीढ़ियों से यह विद्या जीवित रखी गई है। इसी तरह यह विद्या पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होने की प्रक्रिया ही घरानों के निर्मिति का कारण हो गई। गुरू-शिष्य परम्परा के द्वारा विद्या, कला जीवित रखने में घरानों की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

तबले में दो प्रमुख बाज हैं। बंद बाज एवं खुला बाज। बंद बाज में दायें-बायें से मर्यादित आस उत्पन्न होती है। इस बाज में किनार का एवं दो उँगलियों का प्रयोग अधिक होता है। इसमें विस्तारक्षम रचनाओं की विपुलता होती है। खुले बाज में नाद की आस गूँजयुक्त एवं प्रबल होती है। इस बाज पर पखावज़ का प्रभाव होने के कारण यह बाज पखावज़ की वादनशैली से अधिक निकट है। इसमें नादनिर्मिति के लिए उँगलियों के साथ-साथ पूरे पंजे का प्रयोग भी प्रचलित है। इसमें पूर्वसंकल्पित रचनाओं की विपुलता है। इन दो प्रमुख बाजों से तबले के घरानों की निर्मिति हुई है।

दिल्ली घराना अन्य सभी घरानों का जनक माना गया है। दिल्ली घराने के शिष्यों ने अपने वादन में अपनी निज़ी प्रतिभा एवं सृजनशक्ति के आधार पर परिवर्तन कर अपनी अलग पहचान बना ली। इसका अनुकरण उनके वंशज एवं शिष्यों द्वारा कई पीढ़ियों तक चलता रहा। कालान्तर में उसे एक नये घराने की मान्यता मिली। इस प्रकार तबले में दिल्ली, अजराड़ा, लखनऊ, फर्रुखाबाद, बनारस एवं पंजाब ये छह घरानें अस्तित्व में आए। दिल्ली घराने ने बंद बाज एवं लखनऊ घराने ने खुले बाज का स्वीकार किया। अजराड़ा घराना दिल्ली का शागिर्द घराना और फर्रुखाबाद, बनारस ये दो घरानें लखनऊ के शागिर्द घरानों के रूप में उद्‌भूत हुए। पंजाब घराने का विकास स्वतंत्र रूप से पखावज़ के आधार पर हुआ। ''पं. अरविंद मुळगांवकरजी द्वारा 'ललियाना अथव बंबई' नामक और एक घराना

बताया गया है।'' ३ ''कुछ लोगों के अनुसार और दो घराने हैं - दतियाँ और बतियाँ। इनके बारे में शास्त्रोक्त उल्लेख नहीं है। '' ४

''कलाकार किसी स्थापित घराने से सम्बन्धित है, तो उसके बारे में अच्छी धारणा रखी जाती है, भले ही अन्य कलाकारों को सुनकर उनके विचारों को अपनी शैली में व्यक्त करता है तथा अपने घराने की परम्परा से जोड़ देता है। ''५

प्रत्येक घराने के अपने नियम हैं। हर एक घराने के बोल बन्दिशों में एवं निकास विधि में अन्तर है। विभिन्न घरानों की शैली और वादनविशेषता भिन्न है। साहित्य, तंत्र, सौंदर्य के सन्दर्भ में हर एक घराने ने अपनी अलग पहचान बनाई है। इन छह घरानों की जानकारी के साथ-साथ इन घरानों के बन्दिशों की भाषा, यमक, अलंकार, छन्द अर्थात् काव्यात्मक सौंदर्य, खाली-भरी का सौंदर्य, रचनात्मक सौंदर्य, नादसौंदर्य तथा दायाँ-बायाँ का बन्द-खुला नाद, आस, मींड याने निकास सौंदर्य, गणित सौंदर्य, ग्रह, जाति, यतिभेद, लयबंध इन विशेषताओं सहित विभिन्न घरानों की गतों तथा गतटुकड़ों का सोदाहरण विवेचन देने का प्रयास इस अध्याय में किया है, ताकि तबला प्रेमी इसे पढ़कर हर बन्दिश का सौंदर्य जानने में रूची रखें तथा वादन में इनका प्रयोग करें।

४.१ दिल्ली घराना

दिल्ली घराने को अपनी निज़ी विशेषताओं के साथ तबले का आद्य घराना होने का श्रेय प्राप्त हुआ है। तबले के आविष्कारक उ. सिद्धारखाँ ढाढी को दिल्ली घराने का मूल प्रवर्तक माना गया है। यह घराना पखावज़ के प्रभाव से मुक्त है। ख्याल को अनुकूल तबलावादन पद्धति का प्रभाव दिल्ली घराने पर हुआ है। इस घराने का बाज कोमल, मधुर है। ''सिद्धारखाँ ने युग की बदलती हुई रुचि का गहराई से अध्ययन किया और पखावज़ के आधार पर तबले को ऐसा कलेवर दिया कि उसका रूप पखावज़ से पृथक् होकर सामने आया। पखावज़ के खुले बोलों को तबले पर बजाने योग्य बनाया, अँगुलियों के रख-रखाव में परिवर्तन किये और चाटी प्रधान कुछ नवीन विस्तारशील रचनाएँ, जैसे पेशकार, कायदे, रेले तथा अविस्तारशील रचनाएँ, जैसे गत, टुकड़े, मुखड़े-मोहरे आदि की रचना

करके एक क्रान्तिकारी कदम उठाया। कालान्तर में उनकी वंश परम्परा और लम्बी समर्थ शिष्य परम्परा ने उस घराने को सुदृढ़ किया, विस्तृत किया'' ६

दिल्ली घराने में चाटी/किनार का अधिक प्रयोग होने के कारण इसे 'किनार का बाज' कहा जाता है।

तर्जनी एवं मध्यमा इन उँगलियों का अधिक और स्वतंत्र रीति से प्रयोग होने के कारण दिल्ली बाज को 'दो उँगलियों का बाज' भी कहते हैं। कभी कभी 'तिरकिटतिरकिट' जैसे विशिष्ट बोलों में पहले 'तिरकिट' का 'ट' बजाने के लिए अनामिका का उपयोग किया जाता है। इससे गतिमानता बढ़ाने का एवं ध्वनि विविधता निर्माण करने का उद्देश सफल होता है। बायें पर 'घेगे' ये दो अक्षर लगातार बजाने के लिए क्रमश: मध्यमा और तर्जनी का उपयोग किया जाता है अथवा रचनानुसार उँगलियों का क्रम कभी कभी उलटा भी किया जाता है। चूँकि दिल्ली बाज उँगलियों का बाज है और इसमें पूरे पंजे का प्रयोग वर्ज्य है, अत: इसमें 'धिरधिर' का निकास पूड़ी के अन्दर ही होता है।

यह बाज चाटी प्रधान होने के कारण इस घराने के वादन में ध्वनि की उत्पत्ति सीमित होती है। इसलिए इसे 'बन्द बाज' की संज्ञा दी जाती है। बन्द बाज होने के कारण एवं दायें की उँगलियों का स्वतंत्र आघात और बायें पर हाथ न उठाते हुए बजाने की रीति के कारण दिल्ली घराने की वादनशैली में दायाँ-बायाँ से मर्यादित आस निर्मिति होती है।

स्वतंत्र वादन की दृष्टि से दिल्ली बाज एक श्रेष्ठ बाज है। इसमें घुमारा, मींडकाम, घीसकाम नहीं किया जाता है। इस बाज में नाजूक, मुलायम तथा शुद्ध नादों की मिठास पर अधिक ध्यान दिया है। विद्वानों एवं श्रोताओं पर इस बाज का अच्छा प्रभाव है।

इस घराने की अधिकांश रचनाएँ चतस्त्र जाति में निबद्ध होती हैं। इसमें पेशकार, कायदा, रेला इन विस्तारक्षम रचनाओं की विपुलता हैं एवं मुखड़े, मोहरे, छोटे-छोटे टुकड़े भी विशेष रूप से बजाए जाते हैं। इस बाज में कायदे के विस्तार की विशिष्ट पद्धति होती है।

किनार का अधिक प्रयोग एवं दो उँगलियों का स्वतंत्र रीति से प्रयोग होने के कारण इस बाज में गतों के लिए आवश्यक भारी बोल बजाना अनुकूल नहीं है। इसी कारण खुले बाज की तुलना में इस बन्द बाज में गतों की निर्मिति बहुत कम मात्रा में हुई है। फिर भी कुछ विलक्षण प्रतिभावान रचनाकारों ने दिल्ली वादनशैली में कर्णमधुर गतें, टुकड़े, मोहरे इनकी सुंदर रचनाएँ की है, जिनकी कोई तुलना नहीं है। उ. इनाम अली खाँ दिल्ली घराने की गतें प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया करते थे।

'तीट', 'तिरकिट', 'धातीधागे', 'धिनागिना', 'तिनागिना' ये दिल्ली बाज में प्रयुक्त कुछ विशेष बोल हैं।

स्वतंत्र वादन की दृष्टि से दिल्ली बाज श्रेष्ठ है। लखनऊ तथा अजराड़ा घरानों के विकास में दिल्ली घराने की प्रमुख भूमिका मानी जाती है। दिल्ली घराने के वंशजों ने लखनऊ घराने की स्थापना में योगदान दिया एवं दिल्ली घराने के दो शिष्यों ने अजराड़ा घराने की नींव डाली।

दिल्ली घराने में उ. सिद्धारखाँ के तीन पुत्रों में से एक पुत्र उ. बुगरा खाँ, उ. बुगरा खाँ के दो पुत्र उ. सिताब खाँ और उ. गुलाब खाँ, उ. सिताब खाँ के पुत्र उ. नजर अली खाँ और दौहित्र उ. बडे काले खाँ, उ. बडे काले खाँ के पुत्र उ. बोली बख्श खाँ एवं उ. बोली बख्श खाँ के पुत्र उ. नथ्थूखाँ तथा शिष्य उ. मुनीर खाँ ऐसी परम्परा हुई है। उ. बुगरा खाँ के दूसरे पुत्र उ. गुलाब खाँ, इनके पुत्र उ. मोहम्मद खाँ, उ. मोहम्मद खाँ के पुत्र उ. छोटे काले खाँ, उ. छोटे काले खाँ के पुत्र उ. गामेखाँ और उ. गामे खाँ के पुत्र उ. इनाम अली खाँ, उ. इनाम अली खाँ के पुत्र उ. गुलाम हैदर, शिष्य पं. मारूतिराव कीर, उ. लतीफ अहंमद खाँ, पं. सुधीर माईणकर इतनी सारी दिल्ली घराने के दिग्गजों की तथा तबलावादकों की महान परम्परा हुई हैं।

दिल्ली घराने की अथवा इस घराने के वादकों द्वारा बजाई गई सुंदर गतें आगे प्रस्तुत हैं।

४.१.१ गत रचना- उ. सिताब खाँसाहब डॉ. अमित खेर से प्राप्त

धाऽघेघे	नगधिन	धाऽधिन	धिनघेघे	।
x नगधिन	गिनाधागे	तिरकिट धिना	गिनागिना	।
२				

धाऽऽऽ गिनाधाऽ धाऽगिना धाऽऽऽ ।
०
गिनाधागे तिरकिट धिन धागे तिरकिट तिनाकिना ।
३
ताऽकेके नकतिन ताऽतिन तिनकेके ।
x
नकतिन किनाताके तिरकिट तिना किनागिना ।
२
धाऽऽऽ गिनाधाऽ धाऽगिना धाऽऽऽ ।
०
गिनाधागे तिरकिट धिन धागे तिरकिट धिनागिना । धा
३ x

४.१.२ ''गत ताल - त्रिताल पं. हिमांशु महंतजी से प्राप्त

धाधा धा तिट घिनतिना तिटघिना ।
x
तिनाक्डधा तिटघिना तिना घिडनग धाऽतिर किटतक ।
२
तिरकिटतकताऽ तिटघिना तिनातिट किटघिना ।
०
तिनाक्डधा तिटघिना तिना घिडनग धाऽतिरकिटतक । धा'' ७
३ x

दिल्ली घराने के इस गत की चाल बहुत ही सुंदर है। नवीं मात्रा से आया हुआ 'तिरकिटतकताऽ तिटघिना तिना' बोल इस रचना का अलग ढंग दिखाता है और पुन: चौथी पंक्ति की बोलरचना दूसरे पंक्ति के समान रख कर 'धाऽतिरकिटतक धा' बोल लेकर बहुत खुबी से सम आती है।

४.१.३ ''गत ताल - त्रिताल पं. आमोद दंडगेजी से प्राप्त

घेघेतिट घेघेतिट घिनधिन धिनागिन ।
x
तागेतिट घेघेतिट घिनधिन धिनागिन ।
२

घेऽ तिट ऽघि डऽ ।
०
नग ऽधिन धिनागिन नागेतिट । धा'' ८
३ x

४.१.४ गत रचना - उ. चाँद खाँसाहब डॉ. केदार मुकादमजी से प्राप्त

धातीधाऽ ऽऽगिन धातिगिन धिनाऽऽ ।
x
धागेनकत् गिनधाति गिनधिना किटतक ता ।
२
ता किटतक ता किटतक ता ता किडनगतिरकिट ।
०
तकताऽतिरकिट धातिधागेन धातिधागेन धातिधागेन । धा
३ x

४.१.५ गत रचना - डॉ. कुमार ऋषितोष डॉ. अमित खेर से प्राप्त

धा	ऽ	धाती	गेना ।	धा	ऽ	ऽ	धाती ।
x				२			
धागे	नधा	तीधा	गेन ।	धाती	धागे	धिना	गिना ।
०				३			
ती	ती	ती	किटतक ।	ना	ना	ना	किटतक ।
x				२			
तिरकिट	तकताऽ	तिरकिट	धाती ।	धागे	नाधा	तीधा	गेन ।
०				३			
ता	ऽ	ताती	केना ।	ता	ऽ	ऽ	ताती ।
x				२			
ताकि	नता	तीता	किना ।	ताती	ताके	तिना	किना ।
०				३			
ती	ती	ती	किटतक ।	ना	ना	ना	किटतक ।
x				२			
तिरकिट	तकताऽ	तिरकिट	धाती ।	धागे	नधा	तीधा	गेना । धा
०				३			x

४.१.६ ''गत ताल झपताल श्री. नंदकिशोर दातेजी से प्राप्त

धातित् धा ऽ । गिनधाति गिनतिना किन धातीत् ।
x २
धा क्डधेत्धि । किटघिन धातिगिन तिना किटतक ।
० ३
ता ऽकिटतक । ती ऽकिटतक ताऽ ।
x २
किटतक ती ऽकिटतक । ता किटतक ती किटतक तिरकिटतकताऽ ।
० ३
तिरकिट धातित् धागेनधा । तित् धागेन धाऽ धातिधागे ।
x २
नधा तित् धागेनधा । ऽधातित् धागेनधा तित् धागेन । धीं''९
३ x

४.१.७ लड़ी अंग की गत रचना-उ. इमान खाँसाहब डॉ. अमित खेर से प्राप्त

धाऽक्रधा तिटघिन धिनाक्रधा तिटघिन ।
x
धातिटधा क्रधातिट गिनाधागे धिनागिन ।
२
किनातिट तातिटति ट्तागेन तिनाक्रधा ।
०
धाऽक्रधा धातिटति ट्धागेन धिनाक्रधा । धा
३ x

४.१.८ ''त्रिकोण गत ताल - त्रिताल

नगिन तेटे तेटे घिन घेघे नगि ननाx
ना । तेटे तेटे धागेना तीना कता ना
२
नाऽ तीन । क तीनक नाती ना
०
ना घिनक घिनग घेना ।
ना ना घे घे नागेना
३
ना घेना घेना
ना ना धे
ना । धा'' १०
x

यह दिल्ली घराने की चतस्त्र जाति की बन्दिश है। इस गत के बोल ऐसे रखे गए हैं कि देखने पर त्रिकोण के समान प्रतीत होता है, अत एव इसे 'त्रिकोण गत' कहते हैं। यह दो उँगलियों से बजाई जाती है।

४.१.९ ''प्रास गत ताल - त्रिताल समा - यति

धातिधाऽ धातिगेन धिंनागेन क्डधेतधि ।
x
तिटगिन धातिगेन धिंनागेन तऽऽऽ ।
२
ऽऽ किटतक तिंऽऽऽ ऽऽ किटतक तिऽऽऽ ।
०
ऽऽ किटतक तिंऽऽऽ ऽऽ किटतक ताऽ किटतक ।
३
तिंऽ किटतक तिऽ किटतक तिंऽ किटतक ताकिटतकतिं ।
x
किटतकतिकिट तकतिंकिटतक ताऽ तिरकिटतक तिरकिटतकताऽ ।
२
तिरकिट धाति ऽधाधाति तिरकिटतकताऽ तिरकिट धाति ।
०
ऽधाधाति तिरकिटतकताऽ तिरकिट धाति ऽधाधाति । धा'' ११
३ x

४.१.१० गत रचना - उ. नत्थू खाँसाहब डॉ. अमित खेर से प्राप्त

धागेतिट घिडाऽन् धिनगिन धागे तिरकिट ।
x
धिनागिन तिटकिट घेनकता तिटघिन ।
२
तकिटधा तिरकिट धिन घिडनग धागेतिट ।
०
घिडाऽन धिनगिन धागे तिरकिट तिनाकिना ।
३
ताकेतिट किडाऽन् तिनकिन ताके तिरकिट ।
x

तिनाकिन तिटकिट केनकता तिटकिन ।
२
तकिटधा तिरकिट धिन घिडनग धागेतिट ।
०
घिडाऽन धिनगिन धागे तिरकिट धिना गिना । धा
३ x

४.१.११ लाहोरी गत दिल्ली घराना पं. आमोद दंडगेजी से प्राप्त

घिनाकेना केनातिट घिनाकेना केनातिट ।
x
घितकघि तकघिन धागे तिरकिट तीना किडनग ।
२
तिरकिटनगतिर किट नगतिट घितकतिर किडनग तिट ।
०
घितकघि तकघिन धागेतिरकिट तीना किना । धा
३ x

४.१.१२ ''गत दिल्ली घराना रचना - उ. गामे खाँ

घेघेनाती ऽत्घेघेना धाऽऽधा घिडनग । तिंगनग घेघेनाधा धिनागिना केकेनाता ।
x २
तिनाकिना घेघेतिटघेघेतिट घिनतिनतिनाकिना ताकेतिटघेघेतिट ।
०
घिनतिनतिनाकिना घेऽतिट ऽघेघेऽ नागेऽधिन धिनागिनानागेतिट । धा'' १२
३ x

४.१.१३ मींड़ की गत रचना - उ. सिताब खाँसाहब डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धींगेगेना ऽनधागे तेटेकेटे धागेतेटे ।
x
धागे तिरकिट धिनीधागे तिरकिट धिन धिनागिना ।
२
धागेतेटे केटेतक धिंऽऽऽ ऽऽधागे ।
०

तिटकिट धागेतेटे धागे तिरकिट धिनागिना ।
३
तींकेकेना ऽनताके तेटेकेटे ताकेतेटे ।
x
ताके तिरकिट तिनीताके तिरकिट तिन तिनाकिना ।
२
धागेतेटे केटेतक धिंऽऽऽ ऽऽधागे ।
०
तिटकिट धागेतेटे धागे तिरकिट धिनागिना । धा
३ x

४.१.१४ गत रचना - उ. फैयाज खाँसाहब डॉ. अमित खेर से प्राप्त

धा-घेना ऽनतिट घेनाऽत घेघेतिट ।
x
घेघेनागे धिनधागे त्रकधिन धिनागिना ।
२
घेघेधिन गिनधागे धिनगिन धागेतिट ।
०
धाऽघेघे नागेधिन धागेत्रक तिनाकिना ।
३
ताऽकेना ऽनतिट केनाऽत केकेतिट ।
x
केकेनाके तिनताके त्रकतिन तिनाकिना ।
२
घेघेधिन गिनधागे धिनगिन धागेतिट ।
०
धाऽघेघे नागेधिन धागेत्रक धिनागिना । धा
३ x

४.१.१५ गत रचना - उ. सिताब खाँसाहब डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धागे नाऽतित ऽधा गेना ।
x
धाऽ धागेघेघे नगधिन धिनागिना ।
२

धागे नाधा धिना गिना ।
०
ताके नाता तिना किना ।
३
धागेतेटे धागेतेटे धागेधिन तागेतेटे ।
x
धगिनधा तिरकिट धिनी धागे तिरकिट धिनागिना ।
२
ताऽ तेटे ऽघे डऽ ।
०
नग ऽऽघिड नगधिन धिनागिना । धा
३ x

४.१.१६ गत रचना - उ. छोटे काले खाँसाहब डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

नगधेत् धिरधिर धिरघेड नगदिन ।
x
तकधिन धागे तिरकिट धिनीघेड नगदिन ।
२
धिनाकेड नकधिन धागे तिरकिट धिनाघेड ।
०
नगधिन नगधिन धिनाकेड नकधिन । धा
३ x

४.१.१७ तिपल्ली गत रचना - उ. फैयाज खाँसाहब डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धगेऽतकिट धात्रकधिकिट कतगदिगन धाऽऽकतग ।
x
दिगनधाऽऽ धात्रकधिकिट कतगदिगन धाऽधगेऽतकिट ।
२
धात्रकधिकिटकत गदिगनधाऽकत गदिगनधाऽधात्र कधिकिटकतगदि ।
०
गनधाऽऽऽधगेऽतकिट धात्रकधिकिटकतगदिगन
३
धाऽऽकतगदिगनधाऽऽ धात्रकधिकिटकतगदिगन । धा
x

४.१.१८ लड्डी अंग की गत रचना - नजर अली खाँसाहब डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धाऽघेड् नगधिन धागे तिरकिट धिनागिना ।
x
धागेधिन धिनागिना धागे तिरकिट धिनागिना ।
२
धागेधिन धागे तिरकिट धिनागिना धागेधिन ।
०
धिनागिना धागे तिरकिट धिनागिना धागेधिन ।
३
ताऽकेड् नकतिन ताके तिरकिट तिनाकिना ।
x
ताकेतिन तिनाकिना ताके तिरकिट तिनाकिना ।
२
धागेधिन धागे तिरकिट धिनागिना धागेधिन ।
०
धिनागिना धागे तिरकिट धिनागिना धागेधिन । धा
३ x

४.१.१९ गत रचना - नजर अली खाँसाहब डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

दिंऽगेना धिगिनधा ऽतिऽधा धाऽधागे ।
x
नागेधिन धागे तिरकिट धिनागिना धागेतेटे ।
२
धागेधिन तागेतेटे धागेनधा तिरकिट धिना ।
०
गदिगन धागे तिरकिट धिनागिना तागेतेटे ।
३
तिंऽकेना तिकिनता ऽतिऽता ताऽताके ।
x
नाकेतिन ताके तिरकिट तिनाकिना ताकेतेटे ।
२
धागेधिन तागेतेटे धागेनधा तिरकिट धिना ।
०
गदिगन धागे तिरकिट धिनागिना तागेतेटे । धा
३ x

४.२ अजराड़ा घराना

उत्तर प्रदेश के मेरठ जनपद में अजराड़ा नामक एक गाँव है। वहाँ के मूल निवासी उ. कल्लूखाँ, उ. मीरूखाँ। इन दो बन्धुओं ने दिल्ली घराने के उ. सिद्धारखाँ ढाढी के पौत्र उ. सिताब खाँ से तबले की विधिवत् शिक्षा प्राप्त की। गुरू से प्राप्त परम्परागत वादनशैली में अपनी प्रतिभा से मौलिक परिवर्तन कर नये ढंग की बन्दिशें निर्माण की और कालान्तर में एक नये पृथक् अजराड़ा घराने की नींव डाली। ये दोनों बन्धु 'अजराड़ा' नामक गाँव के निवासी थे। अत: उसी गाँव के नाम से 'अजराड़ा घराना' प्रसिद्ध हो गया। यह घराना दिल्ली का शागिर्द घराना है एवं दिल्ली घराने की निकटतम शाखा है। दिल्ली एवं अजराड़ा घराने की वादनपद्धति में साम्य होते हुए भी बाज एवं विचारधारा के विषय में अजराड़ा घराने ने अपनी अलग पहचान बनाई, जिससे इस घराने ने तबलावादन में अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण किया।

दिल्ली घराने की अधिकांश रचनाएँ चतस्त्र जाति में रचायी गई हैं। अजराड़ा घराने के विद्वानों ने लय वैचित्रता का नवीन प्रयोग कर ज़्यादातर कायदों की रचनाएँ तिस्त्र जाति में कीं।

इस घराने के कलाकारों ने तबलावादन में तर्जनी और मध्यमा के साथ-साथ दायाँ-बायाँ पर अनामिका का प्रयोग करना शुरू कर दिया। दिल्ली घराने की रचनाओं में अधिकतर 'ना' बोल, जो तबले के किनार पर बजाये जाते हैं, उनमें से कुछ 'ना' बोलों का प्रयोग अजराड़ा घराने में अनामिका की सहायता से तबले की स्याही पर किया गया। उदा. 'धिनागिना' में 'गि' के बाद एवं 'धिनागिना' शब्द के पहले बजनेवाले 'ना' बोल का निकास अजराड़ा घराने में अनामिका का उपयोग करके तबले की स्याही पर बजाने की प्रथा शुरू हुई। इससे अजराड़ा घराने में दो विशेषताएँ निर्माण हुई। किनार का अधिक उपयोग करके निर्माण होनेवाली कर्णकटुता कम हुई और बोलों में अलग प्रकार का सौंदर्य निर्माण हुआ। सभी 'ना' चाटी पर बजाने से गति में आनेवाला व्यत्यय कम होने के कारण अजराड़ा घराने की रचनाएँ दिल्ली घराने की तुलना में गतिमान हुई।

अजराड़ा घराने की रचनाओं में कई स्थानों पर कुछ अक्षरों के बाद विराम अथवा विश्राम होता है। उदा. धींऽऽ धागेन, धाऽक्ड धातिट, घिनाऽ धागेन आदि। ये विरामस्थान बायें की मींड़ द्वारा सुंदरता से भर दिए जाते हैं।

कायदे में सामान्यत: भरी के बोल ही खाली में लेने का नियम होता है, इस नियम को अपवाद हो, ऐसे कायदों की निर्मिति अजराड़ा घराने में हुई है। अजराड़ा घराने ने कायदों की खाली अलग ढंग से सिद्ध की है। इस घराने के कायदों में खाली के लिए अलग बोलों की रचना की गई। इसका उद्देश यही होगा कि अजराड़ा बाज बायाँप्रधान है और इसमें मींडकाम, घीसकाम की प्रबलता होने के कारण अजराड़ा घराने के कायदे भरी में बहुत ही सौंदर्यपूर्ण लगते हैं। इस बाज की रचनाओं के विराम जो भरी में मींडकाम, घुमारा की सहायता से जीवित किए जाते हैं, वही विराम खाली में बायाँ का प्रयोग न होने के कारण रिक्त एवं रसहीन लगते है। इसी कारण आगे भरी का भाग आने तक श्रोताओं का चित्त अचल ताजा रखने के लिए खाली की प्रत्येक मात्रा में अधिकाधिक अक्षरों की योजना इस बाज के विचारवंतों ने की है। उदा. 'घिनाऽधागेना धात्रकधागेना धात्रकधातीधा घिनतिनागिन। तिरकिटतकताऽतिरकिट धिनाऽधागेना धात्रकधातीधा घिनतिनागिन। तिंगतिनागिन तागेतिरकिट तागेतिटतागे त्रकतिनाकिडनग। तिरकिटतकताऽतिरकिट धिनाऽधागेना धात्रकधातीधा घिनधिनागिन।' इस कायदे में खाली के बोलों में 'किनाऽताकेना तात्रकतागेना तात्रकतातीता किनतिनागिना' के स्थान पर 'तिंगतिनागिन तागेतिरकिट तागेतिटतागे त्रकतिनाकिडनग' इन बोलों का प्रयोग हुआ है, जो कायदे के साधारण नियमों से हट कर हैं। यही अजराड़ा घराने की विशेषता है।

अजराड़ा घराना कायदों की खूबसूरती और विविधता के लिए विशेष प्रसिद्ध है। अजराड़ा घराने में तिस्त्र जाति के ही नहीं, बल्कि चतस्त्र जाति के कुछ उतने ही सौंदर्यपूर्ण कायदों की रचनाएँ भी हुई हैं।

अजराड़ा घराने ने बायें की निकास पर विशेष ध्यान दिया है, ताकि वादन अधिकाधिक सौंदर्यपूर्ण एवं नजाकत युक्त हो सकें। इस घराने के वादन में मींडकाम एवं घीसकाम का समावेश

किया गया है ताकि इसके कारण नादविविधता निर्माण होकर तबलावादन अधिकाधिक सुमधुर हो सके। इस घराने में दायें-बायें का सुंदर समन्वय होता है।

स्वतंत्र तबलावादन के लिए अजराड़ा बाज बहुत सफल है। इसमें 'धागेन', 'धातक', 'घेतक', 'घिनतूनागिन', 'तिंगतिनागिन, 'धागेतिरकिट', 'धाधागिन', 'तकघिन', 'धागिनतिनक', 'धाक्डधातिधागेन', 'धागेधिनाधागेधिना' आदि बोलों का प्रयोग होता है।

उ. कल्लूखाँ एवं उ. मीरू खाँ इन दो बन्धुओं के वंशज उ. मुहम्मदी बख्श, उ. मुहम्मदी बख्श के पौत्र उ. काले खाँ, उ. काले खाँ के पुत्र उ. कुतुब खाँ एवं पौत्र उ. हस्सू खाँ, उ. हस्सू खाँ के पुत्र उ. शम्मूखाँ, उ. शम्मू खाँ के पुत्र उ. हबीबुद्दीन खाँ, उ. हबीबुद्दीन खाँ के पुत्र उ. मंजू खाँ तथा शिष्य सर्वश्री प्रो. सुधीरकुमार सक्सेना, पं. हजारीलाल, पं. राम धुर्वे, पं. सुंदरलाल गंगानी, उ. पप्पन खाँ उल्लेखनीय हैं। इस घराने की परम्परा जीवित रखने में उ. हशमत अली खाँ, उ. रमजान खाँ, पं. यशवंत केरकर, डॉ. अजय अष्टपुत्रे, पं. मधुकर गुरव, पं. पुष्कराज श्रीधर, पं. दिव्यांग वकील, डॉ. गौरांग भावसार, पं. प्रभाकर दाते आदि का विशेष योगदान हैं।

अजराड़ा घराने की कुछ बन्दिशें यहाँ प्रस्तुत हैं।

४.२.१ "गत तिस्त्र जाति ताल - त्रिताल रचना - प्रो. सुधिरकुमार सक्सेना

धगततकिट तकधिनतक तिटकताऽन धिटकताऽन ।
x
धगनकधिंन धगतकधिंन धिंनगेगेनक धिंनधिंनागेऽ ।
२
गेनकतिंऽन ताकेतिरकिट ताकेतिटताके त्रकतिंनाकेन ।
०
धाऽगेगेनक धिंनधिंनागेन धिंनगेगेनक धिंनधिंनागेन । धा" १३
३ x

४.२.२ ''गत पारम्पारिक ताल - त्रिताल

धाऽऽक्ड धाऽधिंऽ ताऽतिर किटधाऽ ।
x
क्डधाऽन धिंऽधाऽ किडनक तिरकिट ।
२
धाऽऽक्ड धाऽधिंऽ गेनकतिं ऽनताके ।
०
तिटताके त्रकतिट कतगिन नानाकता । धा'' १४
३ x

अपने घर कुछ दिन रहने के लिए आए हुए रिश्तेदार या दोस्त वापस जाने के समय हम उन्हें और दो-तीन दिन रहने का आग्रह करते है। इस मन की स्थिति का वर्णन प्रस्तुत गत में दिखाई देता है।

४.२.३ ''तिपल्ली गत स्त्रोतागता यति रचना - प्रो. सुधिरकुमार सक्सेना

धिंनकता ऽनधिंन धिंनकता ऽनधिंन ।
x
धिंनकता ऽनधिंन धिंनकता गदिगन ।
२
कतिटता ऽनत्रक धिटकता ऽननग ।
०
तिटकता ऽनधिंन धिंनकता गदिगन ।
३
धिंनकताऽन कतिटताऽन धिंनकताऽन कतगदिगन ।
x
कतिटतात्रक धिटकताऽन धिंनकताऽन कतगदिगन ।
२
धिंनकताऽनधिंन धिंनकताऽनधिंन धिंनकताऽनधिंन धिंनकतागदिगन ।
०
कतिटताऽतात्रक धिटकताऽननग तिटकताऽनधिंन धिंनकतागादिगन । धा'' १५
३ x

४.२.४ दोमुँही गत डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

गिडनग धिनगीन धागेत्रक धिनगीन ।
x
धागेनधा त्रकधिन धागेत्रक धिनगीन ।
२
तकधिंऽ ऽनतक घिडनग तकु ।
०
गिडनग धिनगीन धागेत्रक धिनगीन ।
३
कत् दिन दिन दिन ।
x
ताके त्रक तिना कीना ।
२
गिडनग धिनगीन धागेत्रक धिनगीन ।
०
धागेनधा त्रकधिन धागेत्रक धिनगीन । धा
३ x

४.२.५ गत ताल - झपताल रचना - पं. पुष्कर्राज श्रीधर

डॉ. केदार मुकादमजी से प्राप्त

तकिटधा त्रकधिट । कतघिन दिना धीरधीर किटतक तकिट ।
x २
धाऽऽघि नकतिन । धाति ऽट ऽक ।
० ३
ऽता ऽधीरधीर । किटतक तकीट धा धाऽ नधा ऽन ।
x २
धाऽकिट ताऽनता । ऽनताऽ किटधाऽ नधाऽन । धीं
० ३ x

४.२.६ गत पारम्पारिक डॉ. केदार मुकादमजी से प्राप्त

धाऽगेन धाऽधाऽ धिंऽताऽ तिटगिन ।
x
धाऽधाऽ धिंऽताऽ कतगेन तिनाकिना ।
२
धाऽधाऽ धिंऽताऽ गेनतिना किनाताऽ ।
०
धाऽधिंना किटतकधिरधिर किटतकधाऽतिर किटतकतिरकिट। धा
३ x

४.२.७ दुमुँही गत रचना - पं. पुष्कराज श्रीधर डॉ. अमित खेर से प्राप्त

धाऽघिडनग धिनधागेत्रक धिनघिडनग धिनधिनागिना ।
x
घिडनगघिड नगधागेत्रक धिनघिडनग धिनधिनागिना ।
२
धागततकिट धाऽऽऽऽऽ घिडनगधिन घिडनगधिन।
०
धाऽघिडनग धिनधागेत्रक धिनघिडनग धिनधिनागिना । धा
३ x

यह गत खाली-भरी एवं ठाय-दून रूप में बजायी जाती हैं। इसे नर- मादा गत कहते हैं।

४.२.८ गत ताल - एकताल रचना - पं. सुधिरकुमार सक्सेना

डॉ. केदार मुकादमजी से प्राप्त

धाती धा ऽगिन। धातिगिन धिनागिन। धातीधा ऽ।
x ० २
क्रधेत्धि तिटघिन। घातिगिन तिना किटतक। ता ऽकिटतक।
० ३ ४
ती ऽकिटतक। ता किटतक ता किटतक। ती किटतक ती किटतक।
x ० २
तिरकिटतकताऽ तिरकिट धाति। धगऽन्न धातिधग। ऽन्नधाति धगऽन्न। धीं
० ३ ४ x

४.२.९ गत रचना - उ. हबीबुद्दीन खाँसाहब डॉ. केदार मुकादमजी से प्राप्त

धाऽतक	धिनघाऽ	तकधिन	धागेतिट	।
x				
कताऽन	धाऽऽऽकिटतक	ताऽऽऽकिटतक	ताऽतिरकिटतक	।
२				
ताऽऽऽकिटतक	ताऽकिटतकधिर	धिरकिटधाऽतीऽ	धाऽऽऽ	।
०				
धाधातीधा	गेनधागे	तिनाकधा	तीधागेना	। धा
३				x

४.२.१० दुमुँही गत पारम्पारिक जाति-तिस्त्र डॉ. केदार मुकादमजी से प्राप्त

धाऽगिडनग	धिंऽनाऽगिड	नगधिनधागे	त्रकधिनागिना	।
x				
गिडनगधिंऽ	नाऽगिडनग	धिनगिनधागे	त्रकधिनागिना	।
२				
घगततकिट	धाऽगिडनग	धिंऽऽऽऽऽ	गिडनगधिंऽ	।
०				
धाऽगिडनग	धिंऽनाऽगिड	नगधिनधागे	त्रकधिनागिना	। धा
३				x

४.३ लखनऊ घराना

खुले बाज के सभी घरानों में लखनऊ घराना आद्य घराना है। दिल्ली में लम्बे समय तक तबलावादन की कला फलती-फुलती रही। शनै: शनै: दिल्ली से पूरब की ओर लखनऊ में इसका प्रचार हुआ। भौगोलिक दृष्टि से लखनऊ शहर दिल्ली के पूर्व की ओर स्थित है, अत: इस घराने को 'पूरब घराना' और इसकी वादनशैली को 'पूरब बाज' कहा गया है। दिल्ली घराने का उदय होने के बाद थोड़े ही अवधि में इस घराने का उद्‌भव हुआ।

लखनऊ में संगीत तथा संगीतज्ञों का काफी आदर-सम्मान होता था। लखनऊ शहर की संस्कृति तथा लखनऊ के नबाब ठुमरी जैसी श्रृंगारिक गायकी एवं कथ्थक नृत्य के शौकिन थे। श्रेष्ठ कथ्थक नर्तक-नर्तिकाएँ लखनऊ में जगह-जगह अपनी कला पेश किया करती थी। लखनऊ के

संगीत पर कथ्थक नृत्य का बड़ा प्रभाव था। लखनऊ के नबाब ने कथ्थक नृत्यकारों को आश्रय दिया था । नृत्य की संगति में पखावज़ साथी वाद्य था, लेकिन कथ्थक नृत्य के तत्कार तथा द्रुत लय के कुछ प्रकार पखावज़ पर बजाना मुश्किल होने लगा था। पखावज़ का धीरगंभीर एवं गाढा नाद रसनिर्मिति में अनुकूल नहीं हो रहा था। फलत: साथसंगत के लिए पखावज़ का स्थान तबले ने ले लिया। पखावज़ का प्रभाव कम होता जा रहा था और तबले का महत्त्व बढने लगा था। पखावज़ की तुलना में सुलभ बैठक तथा नाजूक एवं जोरदार दोनों प्रकारों के बोल निर्माण करने की क्षमता, गतिमानता इनके कारण नृत्य के लिए 'पखावज़' से ज़्यादा 'तबला' वाद्य उचित होने लगा था। कथ्थक नृत्य की संगत में जोरदार एवं जोशपूर्ण वादन की आवश्यकता थी, किन्तु उसमें श्रृंगार एवं करूण रस निर्मिति के लिए पोषक, नाजुक और लचीली वादनशैली की भी उतनी ही जरूरत थी।

उस समय दो महान तबलावादक उ. मोदू खाँ और उ. बख्शू खाँ अपनी आजीविका के लिए दिल्ली से लखनऊ आकर बस गए। उन्होंने तत्कालिन सांगीतिक परिस्थितियों का निरीक्षण कर जरूरतों के अनुसार अपनी वादनशैली में परिवर्तन करना आवश्यक समझा। उन्होंने अपनी नयी वादनशैली में अनावश्यक नाजूक नाद कम करने हेतु किनार के बदले लव और स्याही से नाद उत्पन्न करने का प्रयास किया। कर्णमधुरता बढ़ाने हेतु आवश्यक स्थानों पर नाजूक, मुलायम बोलनिकास एवं गति बढ़ाने की दृष्टि से बायें के मैदान पर संपूर्ण पंजा से खुला आघात करने की प्रथा कम की गयी। वादन विशेषता के अनुसार इस बाज को 'थापियाँ बाज' के नाम से भी पहचाना जाता है, क्योंकि इस बाज में तबले पर अंगूठा छोड़कर बाकी चारों उँगलियों के एकत्रित आघात से थाप या जोरदार नाद निर्माण किए जाते हैं। इसमें गत, टुकड़े, परन, चक्रदार बजाये जाते ही हैं और नृत्य के साथ बजाने के लिए विशेष रचनाओं का भी समावेश करके एक स्वतंत्र सर्वांगीय बाज निर्माण किया गया, जो न तो दिल्ली समान बन्द बाज था और पखावज़ का प्रभाव होते हुए भी न हि पखावज़ की भाँति पूरी तरह खुला बाज था। यह नया बाज 'लखनऊ बाज' के नाम से पहचाना जाने लगा।

किनार के बजाय लव और स्याही पर आघात करने से नाद अधिक चौड़ा होकर गतिमानता कम होने के कारण दिल्ली बाज की तुलना में लखनऊ बाज में कायदों की निर्मिति कम हुई। इस घराने

के कायदे दिल्ली, अजराड़ा कायदों की अपेक्षा लम्बे आकार के होते हैं और उनका ज़्यादा विस्तार नहीं किया जाता है। लखनऊ बाज में रेले, गत, गतटुकड़े, परन, चक्रदार आदि वादनप्रकारों की समृद्धता है। इस घराने की रचनाओं में धिटधिट, क्डधातिट, धागेतिट, तागेतिट, धेत् धेत्, त्रकधेत्, धिरधिर, दिंगड आदि जोरदार बोलसमूहों का विशेष प्रयोग किया जाता है।

उ. मोदू खाँ के शिष्यों में उनके पुत्र उ. जाहिद खाँ, भतीजे याने उ. बख्शू खाँ के पुत्र उ. मम्मन खाँ उर्फ उ. मम्मू खाँ एवं पं. रामसहाय विशेष उल्लेखनीय थे। उ. बख्शू खाँ के दूसरे पुत्र उ. सलारी खाँ गत वादन में बडे कुशल थे। उ. बख्शू खाँ के शिष्यों में उनके दामाद फर्रुखाबाद के उ. हाजी विलायत अली खाँ, पं. बेचाराम चटोपाध्याय बडे विद्वान थे। उ. मम्मू खाँ के पुत्र उ. मुहम्मद खाँ, उ. मुहम्मद खाँ के दो पुत्र उ. मुन्ने खाँ तथा उ. आबिद हुसेन खाँ, उ. आबिद हुसेन खाँ के भतीजे उ. वाजिद हुसेन खाँ, उ. वाजिद हुसेन खाँ के पुत्र उ. आफाक हुसेन खाँ तथा पौत्र उ. अलमास हुसेन खाँ ऐसे प्रतिभासम्पन्न यशस्वी कलाकारों की परम्परा है। लखनऊ घराने की परम्परा में उ. महबूबखाँ मिरजकर एवं इन्दौर के उ. जहांगीर खाँ के नाम भी उल्लेखनीय हैं।

लखनऊ घराने की कुछ रचनाएँ आगे प्रस्तुत हैं, जो इस घराने की विशेषताओं को प्रकट करती है।

४.३.१ ''गतमाला पं. हिमांशु महंतजी से प्राप्त

४.३.१.१ गत (लखनऊ) ताल - त्रिताल

तकिटधा	त्रकधिट	क्डधाकेधि	नाकेधिन	।
x				
धिननात	कधिनाके	धीरधीरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	।
२				
तकिटता	त्रकतिट	क्डधाकेधि	नाकेधिन	।
०				
धिननात	कधिनाके	धीरधीरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	। धा
३				x

४.३.१.२ गत (अजराड़ा) ताल - त्रिताल

तकिटधा त्रकधिट धिटकता केधिनाग ।
x
धिननात कधिनाके धीरधीरकिटतक ताऽतिरकिटतक ।
२
तकिटता त्रकतिट तिटकता केधिनाग ।
०
धिननात कधिनाके धीरधीरकिटतक धाऽतिरकिटतक । धा
३ x

४.३.१.३ गत (फर्रुखाबाद) ताल - त्रिताल

तकिटधा त्रकधिट धिटकता क्डधेतिट ।
x
धिकिटता ऽघेतिट धीरधीरकिटतक ताऽतिरकिटतक ।
२
तकिटता त्रकतिट तिटकता क्डधेतिट ।
०
धिकिटता ऽघेतिट धीरधीरकिटतक ताऽतिरकिटतक । धा
३ x

४.३.१.४ गत (पंजाब) ताल - त्रिताल

तकिटधा त्रकधिट तकिटधा त्रकधिट ।
x
कताकेधि नागधिन कताकेधि नागधिन ।
२
धिननात कधिनाके धिननात कधिनाके ।
०
धीरधीरकिटतक धाऽतिरकिटतक धीरधीरकिटतक धाऽतिरकिटतक ।
३
तकिटता त्रकतिट तकिटता त्रकतिट ।
x
कताकेति नाकतिन कताकेधि नागधिन ।
२
धिननात कधिनाके धिननात कधिनाके ।
०
धीरधीरकिटतक धाऽतिरकिटतक धीरधीरकिटतक धाऽतिरकिटतक । धा
३ x

जिस तरह लयमाला होती है, बोलमाला होती है, उसी तरह 'गतमाला' भी होती है। 'गतमाला' संकल्पना का सोदाहरण विवेचन इसमें प्रस्तुत किया है। एक 'लखनऊ' की गत मूलत: कैसी है, देशकाल स्थिति में वो 'अजराड़ा' पहुँची, तो वही क्या रूप लेगी, वो 'फर्रुखाबाद' चली, तो इसका स्वरूप क्या होगा और फिर पंजाब में आ गयी, तो पंजाब में हर बोल दो-दो होते हैं, उसी समान उसकी रचना कैसी की गई, यह इस 'गतमाला' में स्पष्ट होता है।'' १६

४.३.२ ''गत ताल - त्रिताल पं. आमोद दंडगेजी से प्राप्त

धिनतकधिनतक तकतकधिनतक तकधिननगतिट घिडनगधिनतक।
x
धीरधीरधीरधीर घिडनगधिनतक तिटघिडाऽनधाऽ घिडनगधिनतक।
२
तिनतकतिनतक तकतकतिनतक तकतिननगतिट किडनगतिनतक।
०
धीरधीरधीरधीर घिडनगधिनतक तिटघिडाऽनधाऽ घिडनगधिनतक। धा'' १७
३ x

इस गत में लव का प्रयोग है। किसी भी स्थान पर किनार का प्रयोग नहीं किया है।

४.३.३ ''गत ताल - त्रिताल

घिनाऽधाऽड धाऽघिडनग घिडनगतक तिरकिटतक ।
x
तिरघिडनग घिडनगतक तिरघिडनग तिरकिडनग ।
२
तिरतिरकिड नगतिरकिट धिरधिरतक ताऽतिरकिट ।
०
घिनाऽधाऽड धाऽघिडनग धिरधिरघिडनग तिरतिरकिडनग । धा'' १८
३ x

४.३.४ ''टुकड़ा गत ताल - त्रिताल

धेटेधेटे धागेतेटे क्डधातेटे धागेतेटे ।
x
धागेनधा गदिंगन नागेतिटे कताकता ।
२

कतक्रधा तेटेकत क्रधातेटे क्रधातेटे ।
०
घेडाऽन धाऽकत नानाकिटतक नागेतेटे ।
३
केत्रकधिं तेटेधाधिं नाकत्ऽधा धिनाकत्ऽ ।
x
धा कताकता केत्रकधि तेटेधाधिं ।
२
नाकत्ऽधा धिंनाकत्ऽ धा कताकता ।
०
केत्रकधि तिटेधाधिं नाकत्ऽधा धिनाकत्ऽ । धा'' १९
३ x

४.३.५ ''लखनवी गत ताल त्रिताल

धागेनधा गेनधाऽ धाऽऽघेघे नकधिन । तकधिन तकधिन तकधिन तूनाकता ।
x २
तकतक तिनतिन तकटत कटधाऽ । धाऽघेघे नकधिन कतकघे तकधिन ।
० ३
ताकेनता केनताऽ ताऽकेके नकतिन । तकतिन तकतिन तकतिन तूनाकता ।
x २
तकतक तिनतिन तकटत कटधाऽ । धाऽघेघे नकधिन कतकघे तकधिन ।धा''२०
० ३ x

४.३.६ ''लोम-विलोम की दोमुखी गत तिस्त्र जाति

धाधाधा धिंधिंधिं धिरधिरधिर धिटधिटधिट ।
x
धागेनधागेन धिटितधिटित धात्रकधात्रक तकटतकट ।
२
तकतकतक तिनतिनगिन तकटतकट धिरधिरधिर ।
०
धिटधिटधिट धिनागेनधिना गेनधिनागेन धाधाधा । धा'' २१
३ x

४.३.७ ''बढैय्या की रचना ताल -त्रिताल

तिस्त्र जाति तिरकिटतक तिरकिटतक घेनतडाऽन धाघिंधा ।
x
क्रधेऽत नानाना नाऽकिटतक तिरकिटतक ।
२
धगतिटेकत धाऽघिडनग धिनघिडनग तकतिरकिट ।
०
धिनगेनतक तकधिनगेन धिनघिडनग तूनाकिटतक ।
३
धगत तकत धाऽतिरकिट किटतकधिन ।
x

चतस्त्र जाति धागेनधा त्रकधेत धागेत्रक कताकता ।
२

तिस्त्र जाति धिनक घेघेघे ऽऽक्ड धाऽनधाऽन ।
०
धाऽक्ड ताऽनताऽन ताऽक्ड धाऽनधाऽन ।
३
धा ऽ ऽऽक्ड धाऽनधाऽन ।
x
धाऽक्ड ताऽनताऽन ताऽक्ड धाऽनधाऽन ।
२
धा ऽ ऽऽक्ड धाऽनधाऽन ।
०
धाऽक्ड ताऽनताऽन ताऽक्ड धाऽनधाऽन । धा''२२
३ x

४.३.८ ''गत लखनऊ घराना ताल - त्रिताल रचना - उ. बडे मुन्ने खाँसाहब

धिनघिडनग तिटकताऽन् धिरधिरघिड नगतिंगनग ।
x
तकिटतकिट तकघिडनग धिरधिरघिड नगतिंगनग ।
२
क्डधींन्ना धाधींना धिरधिरघिड नगतिंगनग ।
०
तकटधाऽड धाधींना धिरधिरघिड नगतिंगनग । धा'' २३
३ x

४.३.९ ''लखनवी गत ताल - त्रिताल

धाऽघेघे नकधिन तकधिन तकधिन ।
x
तकधिन तूनाकता तकतक तिनतिन ।
२
तकतत कतधाऽ धाऽऽघे नकधिन ।
०
कतकघे तकधिन धागेनधा गेनातिन ।
३
ताऽकेके नकतिन तकतिन तकतिन ।
x
तकतिन तूनाकता तकतक तिनतिन ।
२
तकतत कतधाऽ धाऽऽघे नकधिन ।
०
कतकघे तकधिन धाऽऽघेनकधिन कतकघेनकधिन । धा'' २४
३ x

उपरोक्त गत में कहरवा छन्द का प्रयोग किया गया है, जो लखनऊ की वादनशैली में श्रृंगारिकता प्रमाणित करता है।

४.३.१० ''गत लखनऊ घराना ताल - एकताल रचना - उ. बडे मुन्ने खाँसाहब

घ्डाँऽ घिटतक । ताऽतिर किटतक । तिटकिट तकधिर ।
x ० २
धिरधिर कत् । ऽऽ ऽधिर । धिरधिर कत् ।
० ३ ४
धीरधीर किटतक । तागेतिट क्डाँ । धिन घिडा ।
x ० २
ऽन धिन । घिडा ऽन । धिन गिन ।
० ३ ४
तक् धिंऽतिर । किटतक धिनतक । ताऽतिर किटतक ।
x ० २
धीरधीर कत् । ऽ धिंऽतिर । किटतक धिनतक ।
० ३ ४

ताऽतिर किटतक। धीरधीर कत् । ऽ धिंऽतिर।
x ० २
किटतक धिनतक । ताऽतिर किटतक। धीरधीर कत् । धीं'' २५
० ३ ४ x

४.३.११ ''गत लखनऊ घराना समा यति

धागेतिट घिडाऽन धागेनग दिंनतक ।
x
तकतिर किटधाऽ धिंधिंनग दिंनतक ।
२
तकदिंन तकदिंन नगनग नगनग ।
०
तकतिर किटधाऽ धिंधिंनग दिंनतक । धा'' २६
३ x

४.३.१२ ''तिलयी मंझेदार गत लखनऊ घराना

रचना-उ. लंगडे अहमद बख्श वृंदावनवाले

एकपट किटधेऽऽत् तिरकिटतक धाऽघिडनग तकतिरकिट ।
x
घिनाऽधाऽड धाऽघिडनग घिडनगधागे तिरकिटतक ।
२
तिरकिटतक तिटघिडाऽन घिडनगधागे तिरकिटतक ।
०
तिरकिटतक घिडनगधाऽ घिडनगधागे तिरकिटतक ।
३
किटतेऽऽत् तिरकिटतक ताऽकिडनग तकतिरकिट ।
x
किनाऽताऽड ताऽकिडनग किडनगताके तिरकिटतक ।
२
तिरकिटतक तिटघिडाऽन घिडनगधागे तिरकिटतक ।
०
तिरकिटतक घिडनगधाऽ घिडनगधागे तिरकिटतक ।
३

दीडपट किटधेऽ ऽत्तिर किटतक धाऽ घिड ।
x
नगतक तिरकिट घिनाऽधा ऽड धा ।
२
घिडनग घिडनग धागेतिर किटतक ।
०
तिरकिट तकतिट घिडाऽन घिडनग ।
३
धागेतिर किटतक तिरकिट तकघिड ।
x
नगधाऽ घिडनग धागेतिर किटतक ।
२
किटतेऽ ऽत्तिर किटतक ताऽकिड ।
०
नगतक तिरकिट किनाऽता ऽड ता ।
३
किडनग किडनग ताकेतिर किटतक ।
x
तिरकिट तकतिर घिडाऽन घिडनग ।
२
धागेतिर किटतक तिरकिट तकघिड ।
०
नगधाऽ घिडनग धागेतिर किटतक ।
३

दुप्पट किटधेऽत् तिरकिटतक धाऽघिडनगतकतिरकिट
x
घिनाऽधाऽडधाऽघिडनग घिडनगधागेतिरकिटतक ।

तिरकिटतकतिटघिडाऽन घिडनगधागेतिरकिटतक
२
तिरकिटतकघिडनगधाऽ घिडनगधागेतिरकिटतक ।

किटतेऽत् तिरकिटतक ताऽकिडनगतकतिरकिट
०
किनाऽताऽडताऽकिडनग किडनगताकेतिरकिटतक ।

तिरकिटतकतिटघिडाऽन घिडनगधागेतिरकिटतक
३
तिरकिटतकघिडनगधाऽ घिडनगधागेतिरकिटतक । धा'' २७
x

४.३.१३ गत ताल - झपताल रचना - पं. पुष्करराज श्रीधर

डॉ. केदार मुकादमजी से प्राप्त

धागेतिट तागेतिट । धागे दीं नागेतिट क्रधेतिट ।
x २
धागेतिट गदीगन । नागेतिट कतागदी गनधाऽ ।
० ३
नधाऽन धाता । धाऽऽधा धींना कत् ऽ घिड ।
x २
नगधिन धा घिड । नगतिन ता घिड नगधिन । धीं'' २८
० ३ x

४.४ फर्रुखाबाद घराना

फर्रुखाबाद घराना लखनऊ घराने का शागिर्द घराना है। फर्रुखाबाद घराने के प्रवर्तक उ. हाजी विलायत अली खाँसाहब ने लखनऊ घराने के प्रवर्तक उ. बख्शूखाँ से विधिवत् शिक्षा प्राप्त की। प्रतिभाशाली उ. विलायत अली खाँ के वादन, सर्जन, शिक्षण इन गुणों को देखकर उ. बख्शू खाँ ने उन्हें दिल खोल कर सिखाया। उ. हाजीसाहब ने अपनी पत्नी एवं उ. बख्शू खाँ की बेटी मोतीबीबी से भी लखनऊ घराने की विद्या प्राप्त की। उन्होंने अपनी प्रतिभा एवं सृजनशक्ति के आधार पर लखनऊ घराने की वादनशैली में मौलिक परिवर्तन करके एक नये शैली को जन्म दिया। नये ढंग की असंख्य रचनाएँ करके अपनी नयी परम्परा आरम्भ की, जो फर्रुखाबाद घराने के नाम से प्रसिद्ध हुई। उनका बाज लखनऊ की तरह न तो नृत्य से प्रभावित था, न तो दिल्ली-अजराड़े की तरह बन्द और न ही पंजाब-बनारस की भाँति अधिक खुला था। रचनात्मक सौंदर्य, दायाँ-बायाँ के सभी

निकास एवं स्वतंत्र वादन के सभी वादन प्रकारों का समावेश होने के कारण फर्रुखाबाद घराना समृद्ध हुआ।

फर्रुखाबाद घराने में दिल्ली तथा पूरब बाज का संयोग है। ''पूरब और पश्चिम घराना मिला दिया जाए तो वो फर्रुखाबाद घराना हैं। इतना 'Perfect Combination' उन्होंने अपने बोलों में रखा है।'' २९ ''फर्रुखाबाद बाज में मुक्त प्रहारयुक्त बोलों के व्यवहार के साथ-साथ दाहिने तबले पर दिल्ली बाज की भाँति निगृहीत और अर्धनिगृहीत प्रहारयुक्त बोलों का भी समावेश दिखाई देता है। इसलिए इसमें पूरब बाज की प्रधानता के साथ-साथ दिल्ली का भी कुछ प्रभाव दिखाई देता है।'' ३०

फर्रुखाबाद घराना लखनऊ घराने का शागिर्द घराना होते हुए भी बोलों के निकास और रचना भेद से फर्रुखाबाद ने अपनी अलग सी पहचान बनाई। अपनी अनोखी विशेषताओं के कारण फर्रुखाबाद घराना लखनऊ घराने से अलग और स्वतंत्र बन गया। लखनऊ घराने का शागिर्द घराना होने के कारण इस घराने पर पखावज़ का विशेषत: गतटुकड़े, चक्रदार ऐसी रचनाओं का प्रभाव है। 'गत' रचना फर्रुखाबाद घराने की सर्वश्रेष्ठ विशेषता है। फर्रुखाबाद का पेशकार अत्यन्त लोकप्रिय हुआ है। इस घराने के वादन में लव, चाटी एवं स्याही का यथार्थ प्रयोग करके अपनी वादनशैली के अनुरूप अनेक अप्रतिम गतों की रचना की गई, जिससे फर्रुखाबाद घराने को एक पृथक् घराने की प्रतिष्ठा मिली। फर्रुखाबाद घराने के कायदों में लव, किनार, स्याही इनका संमिश्र उपयोग तथा बायें पर मींड, घुमक आदि निकास के सभी अंगों का समावेश होता है। दिल्ली की तुलना में फर्रुखाबाद के कायदे लम्बे होते है, जिन्हें 'लम्बछड' कायदे कह सकते हैं। इनका विस्तार दिल्ली जैसा नहीं बल्कि मुक्त एवं उत्स्फूर्त कल्पनाशक्ति के आधार पर होता है। फर्रुखाबाद में 'धिनतक', 'धिनगिन', 'तीटघिडनग' आदि बोलों की सहायता से रेले की अनेक रचनाएँ की गई है। फर्रुखाबाद के गतटुकड़ों में 'धगत्तकीट', 'केत्रकधिकिट', 'धागेनाधात्रक', 'कत् तीटतीट' आदि बोलों का प्रयोग किया गया है। 'धिरधिरकिटतक तकिटधा' यह इस घराने की प्रमुख बोलपंक्ति है।

फर्रुखाबाद घराना सर्वसमावेशक है और रचना एवं निकास के संदर्भ में इस घराने ने सुवर्णमध्य अर्जित किया है। दायाँ-बायाँ के सभी निकास एवं पेशकार, कायदे, रेले, गतें, टुकड़े,. परन, चक्रदार इन स्वतंत्र तबलावादन के सभी वादनप्रकारों का समावेश होने के कारण यह घराना अत्यन्त समृद्ध हुआ है। इस घराने ने अपनी शैली आवश्यक उतनी नाजूक, मुलायम तथा आवश्यक उतनी जोरदार बनाने पर ध्यान दिया है याने फर्रुखाबाद की वादनशैली न तो बहुत जोरदार एवं न हि बहुत मुलायम है।

फर्रुखाबाद घरानें की चर्चा करते हुए उ. अहमदजान थिरकवा खाँसाहब ने कहा था कि ''फर्रुखाबाद का तबला शुद्ध तबला है। दूसरे घराने की भाँति उसमें ताशा के बोल, नक्कारा के बोल, ढोल तथा खंजरी के बोल इत्यादि नहीं मिलते। विविध साजों. के बोलों से तबले का विस्तार तो अवश्य होता है किन्तु शुद्धता खत्म हो जाती है। जो भी हो किन्तु फर्रुखाबाद का तबला मधुर, संयत एवं संतुलित है इतना मानना पड़ेगा।'' ३१

फर्रुखाबाद घराने के वादक उत्कृष्ट कलाकार थे ही पर साथ ही साथ उतने ही उच्च प्रति के रचनाकार भी थे। उ. हाजी विलायत अली खाँ, उ. चुडियावाले इमाम बख्श इन फर्रुखाबाद के दिग्गजों की अनेक दर्जेदार गतें बहुत आदर से बजायी जाती हैं। इन दर्जेदार एवं रचना की दृष्टि से अप्रतिम गतों को प्रस्तुत करने में आज के कलाकार गौरव का अनुभव करते हैं। तबलावादन के क्षेत्र में उ. हाजीसाहब की गतें इतनी प्रतिष्ठित हैं, कि अन्य घरानों के वादकों ने इन गतों के आधार पर जोड़ गतों की रचना की हैं। उ. हाजीसाहब के गुरुपुत्र तथा शिष्य अपने युग के कुशल तबलावादक एवं श्रेष्ठ रचनाकार उ. सलारी खाँसाहब ने उ. हाजीसाहब की गतों के जबाब, चलन एवं असंख्य दर्जेदार बन्दिशों से फर्रुखाबाद को समृद्ध किया।

स्वतंत्र वादन के प्रस्तुतिकरण के लिए फर्रुखाबाद एक अत्यन्त सफल एवं उत्तम बाज है क्योंकि स्वतंत्र वादन के लिए आवश्यक सभी विशेषताएँ उसमें सम्मिलित हैं। अत: इस घराने के वादकों ने स्वतंत्र वादन में बहुत नाम कमाया है।

इस वादनशैली में घिडान, तकतक, क्डां, नगनग, घेतिट, धिकिटता, तिटक्डधेतिट, धिरधिरकिटतक तकिट, तातिरकिटतक, धिनतक, धिनगिन, घिडनग आदि बोलसमूहों का प्रयोग होता है।

फर्रुखाबाद घराने ने संगीत जगत् को अनेक अद्वितीय वादक, मूर्धन्य कलाकार तथा प्रतिभावान रचनाकार प्रदान किए हैं। इसी कारण यह घराना पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी नयी-नयी रचनाओं से समृद्ध हुआ है। इस घरानें में उ. हाजी विलायत अली खाँ, उ. निसार अली खाँ, उ. हुसेन अली खाँ, उ. सलारी खाँ, उ. चुडियाँवाले इमाम बख्श, उ. नन्हे खाँ, उ. मसीत खाँ, उ. करामतुल्ला खाँ, उ. फैयाज हुसेन खाँ, उ. शेरखाँ, उ. मुनीर खाँ, उ. अमीर हुसेन खाँ, उ. गुलाम हुसेन खाँ, उ. अहमदजान थिरकवाँ, उ. शमशुद्दिन खाँ, पं. ज्ञानप्रकाश घोष आदि एक से एक दिग्गज वादक तथा रचनाकारों की परम्परा है।

फर्रुखाबाद घराने की विविध बन्दिशें आगे प्रस्तुत हैं।

४.४.१ सवाली गत ताल-त्रिताल रचना - उ. हाजी विलायत अली खाँसाहब
पं. आमोद दंडगेजी से प्राप्त

ताऽधाऽ	घिडनग तक	घिडनगतकधाऽ	घिडनग तक्	।
X				
घिडनगतकधाऽ	ऽडधाऽघिडनग	तक धा ऽड धा	दिंगदिना	।
२				
किटतक तिंग	तिना किटतक	तिरकिटतकताऽ	कत्तिं किडनग	।
०				
घिडनगतकधाऽ	ऽडधाऽघिडनग	तक धा ऽड धाऽ	दिंगदिना	। धा
३				X

प्रस्तुत गत त्रिताल में निबद्ध चतस्त्र जाति की गत है। इसकी रचना में सवाल महसूस होता है, इसीलिए इसे 'सवाली गत' भी कहते हैं। काव्य की तरह इसमें चार पंक्तियाँ हैं और हर एक पंक्ति की मात्रासंख्या समान हैं। इसमें यमक मिलता है। पहला और अन्तिम अक्षर स्वर है। इसकी रचना

खाली-भरी के अनुसार नहीं है, लेकिन खाली-भरी दर्शक है। नवीं मात्रा से बारहवीं मात्रा तक 'किटतकतिंग तिंनाकिटतक तिरकिटतकता कत्तिंकिडनग' इस सौंदर्यपूर्ण बोलपंक्ति में खाली का आभास है। छठी और चौदहवीं मात्रा पर कालान्तर के कारण आन्दोलन मिलता है। इसमें आड लयबंध नहीं है। यह समा यति की गत है। बोलों की रचना सरल होते हुए भी बहुत सुंदर तथा कल्पक है। सुयोग्य निकास के साथ मध्य और उसकी दुगुन में बजाने से मधुरता का अनुभव होता है।

४.४.२ जवाबी गत ताल-त्रिताल रचना - उ. सलारी खाँसाहब

पं. आमोद दंडगेजी से प्राप्त

ताऽधाऽ	घिडनगतक	धाऽघिडनग	तकघिडनग	।
X				
तकधाऽघिडनग	तक घिडनग	धिरधिरघिडनग	तिंना किडनग	।
२				
तकिटधाऽऽडधाऽ	घिडनगधिनतक	धिरधिरघिडनग	तिंना किडनग	।
०				
धिरधिरकत्धिर	धिरधिरघिडनग	धिरधिरघिडनग	तिंना किडनग	। धा
३				X

प्रस्तुत गत हाजीसाहब की सवाली गत का जोड या जवाब है। इस अप्रतिम जवाबी गत में उ. सलारी खाँसाहब ने उ. हाजीसाहब की रचना में बडी कुशलता से बदलाव किया है। गत की गतिमानता बढ़ाने हेतु 'घिडनगधिनतक', 'धिरधिरकत् धिरधिरधिरघिडनग' जैसे ज़्यादा अक्षरों की पंक्तियों का सुयोग्य स्थानों पर प्रयोग करके रचना को और भी उच्चस्तर पर पहुँचा दिया है और एक लाजवाब बन्दिश निर्माण हुई है। यह गत मध्य तथा दुगुन में गंभीरता के साथ सम पर जोरदार आती है।

४.४.३ दोमुखी गत ताल - त्रिताल रचना - उ. नजर अली खाँसाहब

पं. आमोद दंडगेजी से प्राप्त

कताऽघि	नाऽ घिडनग	तक धाऽतिर	किटतकधिरधिर ।
X			

कत् धिरधिर किट धा ऽड धा धिर धिर किट धा ऽड धा दिं ग ।
२
दिना किटतक तिंगतिना किटतकतिरतिर किट ता ऽड ता ।
०
धिर धिर किट धा धिर धिर किट धा ऽड धा दिं ग दिनाकता । धा
३ x

रचना की दृष्टि से ऊपर की दो गतों से समानता दिखानेवाली सुंदर रचना है। इस रचना में नवीं से बारहवीं मात्रा तक किए हुए बोलप्रयोगों से रचना में ही खाली-भरी की सौंदर्यानुभूति मिलती है। आरम्भ और अन्त दोनों में 'कता' बोल है, इसलिए ये दोमुखी गत है। पुनरावृत्त करते समय पहली मात्रा के 'कता' बोल का 'ता' वर्ण थाप से बजाया जाता है।

४.४.४ गत ताल - त्रिताल रचना - उ. सलारी खाँसाहब
डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धागेधिन धिनधिन तकघेघेनकधिन धागेत्रकतिनकता ।
x
घिनकति टकतक ताकेताके तकतिरकिटतक ।
२
धाऽनधिकीट धात्रकधिकीट गद्दींऽन्नकिटतक नगतिरकिटतक ।
०
धीरधीरकिटतक ताधाघेन्त धा कत धीरधीरकिटतक ।
३
ताधाघेन्त धा कत् धीरधीरकिटतक ताधाघेन्त । धा
x

४.४.५ सीधी गत ताल - त्रिताल रचना - उ. हाजी विलायत अली खाँसाहब
पं. आमोद दंडगेजी से प्राप्त

धा घिडनग धीं घिडनग धिरधिरधिरधिर घिडनग धीं ।
x
धिरधिरघिडनग धीं घिडनग धिरधिरधिरधिर घिडनग धीं ।
२

तिरकिटतकतिर किटतक तीं किटतक तिरतिर किटतक तीं ।
०
धिरधिरघिडनग धीं घिडनग धिरधिरधिरधिर घिडनग धीं । धा
३ x

बोलों की रचना सरल होने के कारण इसे सीधी गत कहा है। इस गत में भरी से खाली तक और फिर खाली से भरी तक जाना-आना दिखाई देता है। 'घिडनग' बोल की बजन्त द्रुत में 'घिटतक' होती है। दायें पर ज़्यादातर बंद आघात होते है, फिर भी बीच में 'धीं', 'तीं' इन खुले स्वरमय वर्णों के प्रयोग से रचना असरदार होती है। यह गत दो-तीन बार पुनरावर्तन कर बजाई जाती है और हर बार अन्तिम चार मात्रा में बदलाव करने से रचना का सौंदर्य बढता है। उदा. धिरधिरघिडनग धिं धिरधिर घिडनगधिरधिर घिडनग धिं।

४.४.६ गत रचना - उ. सलारी खाँसाहब डॉ. अमित खेर से प्राप्त

तिटगिना धात्रकधि तिटघिन कत् ऽऽ ।
x
कत् घिना धात्रकधि तिटघिना तित् ऽऽ ।
२
घेऽऽन्त् धाऽऽऽ धिरधिरकिटतक तिरतिरकिटतक ।
०
धिरधिरकिटतक तिरतिरकिटतक धिरधिरकिटतक तिरतिरकिटतक। धा
३ x

४.४.७ "गत ताल-झपताल पं. हिमांशु महंतजी से प्राप्त

धीरधीरकिटतक तकिट धा ।
x
कत् तिट धा तगे ऽन्न धा ।
२
घेघे नाना किटतक ताऽतिर ।
०
किटतकतिरकिट धा किटतक तक धीरधीर । कत् ना" ३२
३ x

४.४.८ गत टुकड़ा ताल - एकताल

धागेतिटतागेतिट धागेदिंगनागेतिट ।
x
क्डधातिटतागेतिट गदिगननागेतिट ।
०
कतिटतागेनधागे तिटकतागदिगन ।
२
धाऽधाऽधाऽकति टतागेनधागेतिट ।
०
कतागदिगनधाऽ धाऽधाऽकतिटता ।
३
गेनधागेतिटकता गदिगनधाऽधाऽ । धीं
४ x

४.४.९ ''गतकायदा ताल - त्रिताल पं. हिमांशु महंतजी से प्राप्त

धाऽतिरकिटधाऽ घिडनगदिंगनग तिरकिटधाऽतिर घिडगदिंगनग ।
x
धीरधीरधीरधीर घिडनगदिंगनग तिरकिटधाऽतिर घिडनगतिंगनग।
२
ताऽतिरकिटताऽ किडनगतिंगनग तिरकिटधाऽतिर घिडनगदिंगनग।
०
धीरधीरधीरधीर घिडनगदिंगनग तिरकिटधाऽतिर घिडनगदिंगनग। धा'' ३३
३ x

४.४.७, ४.४.८ एवं ४.४.९ का अवलोकन किया तो गत, गतटुकड़ा और गतकायदा इनमें स्पष्ट भेद दिखाई देता है। गतटुकड़े में गत का वाङ्मय, गत का साहित्य एवं भारी बोल उपयोग में लाकर उसकी रचना टुकड़े की तरह की जाती है, जो तिहाईयुक्त होती है। गतकायदे में गतों के बोल लेकर उन्हें कायदे का स्वरूप दिया जाता है और इसमें कायदे जैसी खाली-भरी भी की जाती है।

४.४.१० ''गत ताल - त्रिताल रचना - पं. अरविंद मुळगांवकर

घिडनग धिनधाऽ ऽघिड नगधिन । धागेत्रक धिनघिड नगधिन धिनागिन ।
x २
तकटत कटघिन तागेत्रक तिनकिन। धागेत्रक धिनघिड नगधिन धिनागिन ।धा'' ३४
० ३ x

४.४.११ गत रचना - पं. पुष्कर‌राज श्रीधर डॉ. अमित खेर से प्राप्त

घिडनग धिनगिन धागेत्रक धिनागिना ।
x
धागेनधा त्रकधिन धागेत्रक धिनागिना ।
२
तकधिंऽ ऽऽतक धिंऽऽऽ तकऽऽ ।
०
घिडनग धिनगिन धागेत्रक धिनागिना ।
३
कत्ऽऽ धिऽनऽ धिऽनऽ धिऽनऽ ।
x
ताऽकेऽ त्रऽकऽ तिंऽनाऽ कऽताऽ ।
२
घिडनग धिनगिन धागेत्रक धिनागिना ।
०
धागेनधा त्रकधिन धागेत्रक धिनागिना। धा
३ x

४.४.१२ ''गत समा यति रचना-उ. चुडियावाले इमाम बख्श खाँसाहब

धिंनतक दिंगनग तिटकता किडनग ।
x
तिटकता कतधागे तिटघिडा ऽनधिंऽ ।
२
धिटतत किटधागे त्रकधिंन घिडनग ।
०
तकिटधा त्रकधिंऽ धिरधिरकिटतक ताऽतिरकिटतक । धा'' ३५
३ x

४.४.१३ ''गत ताल - त्रिताल पं. आमोद दंडगेजी से प्राप्त

घिडनगतिर घिडनगतिर घिडाऽनधाऽ धार्धींना ।
x
क्डधींऽनाऽन धाऽघिडनग धीरधीरघिड नगधिनतक ।
२
क्डधींऽनाऽन धार्धींऽनाऽन घिडनगतक तिरकिटतक ।
०
धाऽघिडनग तकघिडनग घिडनगतागे तिटकताऽन ।ऽ'' ३६
३ x

मानवी स्वभाव या मानवी विचार वाणी द्वारा किस शब्दों में प्रकट होंगे, इसकी कल्पना करके यह गत की रचना की गई है। पं. दंडगेजी को यह गत पं. भाई गायतोंडेजी से प्राप्त हुई थी। चार दोस्तों में हुए संवाद की कहानी का सम्बन्ध पं. भाईजी ने इस गत रचना से जोड़ा था।

वैसे तो हर एक गत कोई न कोई कहानी का संकेत देती है। उ. झाकिर हुसेन कहा करते है 'अगर सोचिये तो कहानी है, नहीं तो सिर्फ बोल ही बोल है।'

४.४.१४ ''अनागत तिपल्ली ताल-एकताल स्त्रोतागता यति

रचना - उ. सलारी खाँसाहब

धिऽन नातिट । तिटक ताऽन ।
x ०
कत्तिट तिटधागे । तिटगेगे तिटदिंऽ ।
२ ०
धागेदिंऽ धागेतिट । कताकता कत्ऽऽ ।
३ ४
धिंऽनधाऽ दिंऽ किटतक । तिरकिटतक धिरधिरकिटतक ।
x ०
ताऽतिरकिटतक तिरकिटतक । धिरधिरकिटतक ताऽतिरकिटतक ।
२ ०
तिरकिटतक धिरधिरकिटतक। ताऽतिरकिटतक तिरकिटतक ।धीं'' ३७
३ ४ x

४.४.१५ ''गत तिस्त्र जाति स्त्रोतागता यति

धगत तकिट धागेति टकिट ।
x
धात्रक धिकिट कताग दिगन ।
२
तकगि डाऽन धागेति टकिट ।
०
धात्रक धिकिट कताग दिगन ।
३
घिनाग तिंऽन ताकेति टकिट ।
x
ताकेति टताके त्रकतिं नाकिन ।
२
तकगि डाऽन धागेति टकिट ।
०
धात्रक धिकिट कताग दिगन ।
३
धगततकिट धागेतिटकिट धात्रकधिकिट कतागदिगन ।
x
तकगिडाऽन धागेतिटकिट धात्रकधिकिट कतागदिगन ।
२
घिनागतिंऽन ताकेतिटकिट ताकेतिटताके त्रकतिंनाकिन।
०
तकगिडाऽन धागेतिटकिट धात्रकधिकिट कतागदिगन । धा''३८
३ x

४.४.१६ ''सब अकाल तिहाई गत ताल - एकताल

रचना - खलिफा उ. अमीर हुसेन खाँसाहब

ऽधागेनकत घिनकतघिनतिना ।
x
ऽधाकिटतकदिं ताकिटतकधिरधिरधिरकत् ।
०
ऽतातिरकिटतकतिरकिट तागेतिरकिटतकतागेतिटकतान ।
२

ऽधातिरकिटतकतिरकिट धाऽघेंऽतधा ।
०
ऽधातिरकिटतकतिरकिट धाऽघेंऽतधा ।
३
ऽधातिरकिटतकतिरकिट धाऽघेंऽतधा । ऽ'' ३९
४ x

यह अनाघात गत, एक नादसमुह की तीन पंक्तियों के बाद याने तिहाई के बाद खूबसूरती से सम पर आती है।

४.४.१७ गत पारम्पारिक डॉ. अमित खेर से प्राप्त

धाऽघिडनग धिंऽनाऽघिड नगधिनधागे त्रकधिनागिना ।
x
घिडनगधिंऽ नाऽघिडनग धिनगिनधागे त्रकधिनागिना ।
२
धगततकिट धाऽघिडनग धिंऽऽऽऽऽ घिडनगधिंऽ ।
०
धाऽघिडनग धिंऽनाऽघिड नगधिनधागे त्रकधिनागिना । धा
३ x

४.४.१८ ''गत तिस्त्र जाति रचना - उ. हाजी विलायत अली खाँसाहब

तकतकतक तकिटधात्रक धिकिटधिंनाग धिंनधिंनागिन ।
x
धाऽऽधिंनाग तकिटधात्रक धिकिटधिंनाग धिंनधिंनागिन ।
२
धिंनधिंनागिन धिंनधिंनागिन तकिटधात्रक धिंनधिंनागिन ।
०
धाऽऽधिंनाग तकिटधात्रक धिकिटधिंनाग धिंनधिंनागिन । धा'' ४०
३ x

४.४.१९ ''मंझेदार गतटुकड़ा ताल - त्रिताल पं. आमोद दंडगेजी से प्राप्त

धीरधीरकिटतक तागेतिट घिडनग धिनगिन तक्ऽघे तकधिन ।
x
धागेत्रक तूनाकता धीरधीरऽऽ धीर धीरधीरकिटतक
२

तागेतिरकिटतक तागेतिटकिडाऽन धागेतिट ।

घिडनग धिनगिन तक धिनधिना ऽडकत्ऽ ।

०

धीरधीरऽऽ धीर धीरधीरकिटतक ताऽ किटतक धीरधीरऽऽधीर

३

धीरधीर किटतक ताऽ किटतक धीरधीरऽऽ धीर धीरधीरकिटतक । धा'' ४१

x

नदी कैसी भी, किधर भी या कभी उतार पर जोरदार गति से बहती है, इस नदी के प्रवाह की गति का अनुभव इस बन्दिश में होता है।

४.४.२० ''गत तिस्त्र जाति स्त्रोतागता यति रचना - उ. हाजी विलायत अली खाँसाहब

धाऽन धिकिट धात्रक धिकिट ।

x

तत्ति टतिट कतग दिगन ।

२

तिरकिटतक ताऽन घिंऽत डाऽन ।

०

धगततकिट धाऽऽतकिट धात्रकधिकिट कतगदिगन । धा'' ४२

३ x

४.४.२१ ''गत ताल - त्रिताल रचना - पं. अरविंद मुळगावकर

तकिटधा ऽनतकि टधाऽन क्डधातिट ।

x

क्डधातिट तकिटता ऽनतकि टताऽन ।

२

धीरधीरकिटतक तकट धाऽ नधाऽन क्डधातिट ।

०

ताऽनताऽ ऽनक्डधा तिटधाऽ नधाऽन । धा'' ४३

३ x

४.४.२२ ''गत ताल - त्रिताल

धाऽऽत किटधाऽ धाधा तिरकिट ।

x

धागेतिट घिडाऽन घिडनग धिनगिन ।
२
धागेतिट धिनागिन तकिटधा ऽनधाऽ ।
०
धिरधिरकिटतक ताऽतिरकिटतक धिरधिरकिटतक ताऽतिरकिटतक । धा'' ४४
३ x

४.४.२३ ''दोमुँही गत ताल - त्रिताल

धडऽन्नकिट धाऽघिडनग दिंगनगधिरधिर किटतकतकीटधा ।
x
धडऽन्नकिट धाऽघिडनग दिंगननाकत ता ।
२
तक ती तक ता किड नग तिनगिनतागे त्रकतिनाकता ।
०
धडऽन्नकिट धाऽघिडनग दिंगनगधिरधिर किटतकतकीटधा । धा'' ४५
३ x

तिस्त्र जाति में निबद्ध इस गत में आरम्भ और अन्त की बोलपंक्ति एक समान है।

४.४.२४ ''गत (शंखध्वनि) तिस्त्र जाति समा यति रचना - डॉ. गौरांग भावसार

दिंऽगदिंऽग दिंगनदिंगन धात्रकधितिट दिंनगदिगन ।
x
तकधिंनतक धिंनधिंनागेन धात्रकधितिट दिंनगदिगन ।
२
नगनगनग तकधिंनगिन धात्रकधितिट दिंनगदिगन ।
०
दिंऽगदिंऽग दिंगनदिंगन धात्रकधितिट दिंनगदिगन । धा'' ४६
३ x

४.४.२५ ''अनागत तिपल्ली स्त्रोतागता यति

धागेतिर किटधागे तिरकिट धाऽऽऽ ।
x
घिडनग धागेतिर किटघिड नग कत्ऽ ।
२

कऽततिरकिट धाऽघिडनग तिरकिटतक तकक्डाऽन ।
०
धागेतिरकिटधागे तिरकिटधाऽऽऽ घिडनगधागेतिर किटघिडनगकत् । धा'' ४७
३ x

४.४.२६ ''तिस्त्र जाति गत स्त्रोतागता यति

रचना - उ. अमान अली खाँसाहब (हाजीसाहब के सुपुत्र)

धाऽऽधागेन धाऽगेऽनाऽ ऽऽऽधागेन धाऽगेऽनाऽ ।
x
ऽऽऽधागेन धाऽऽधागेन धाऽऽधागेन धाऽगेऽनाऽ ।
२
किटतकतिंऽ नाऽकिटतक नानानानाकिटतक तिरकिटतकताऽतिरकिट ।
०
तिरकिटतकताऽतिरकिट धागेनतिरकिटतक
३
ताऽतिरकिटधागेन तिरकिटतकताऽतिरकिट । धा'' ४८
x

४.४.२७ ''मिश्र जाति गत ताल -त्रिताल रचना - उ. अमीर हुसेन खाँसाहब

घेघेत् तिटतिट घेघेत् धिनतक ।
x
नतक धिटधागे घेतक धिनतक ।
२
धिटत धिटधागे तिरकिटतक तागेतिट ।
०
घेघेंऽ नानानाना तिरकिटतक धिरधिरकिटतक । धा'' ४९
३ x

इस गत के बोल मिश्र जाति के अंग से बांधे हैं। ये बोल लव तथा स्याही पर खुले बजाते समय अचानक 'नानानाना' यह बोल किनार पर बजने से माधुर्य पैदा करता है। मिश्र जाति का वजन, फर्रुखाबाद अंग के सुरेल निकास एवं दिल्ली के किनार का नाजूक काम इनके कारण यह गत आकर्षक और कर्णमधुर हुई है।

४.४.२८ ''गत समा यति

तकिटधा त्रकधिट धिटधिंधा ऽकधिंन ।
x
गेननात् कगेतक धिरधिरकिटतक धाऽतिरकिटतक ।
२
के तिट गेनधिंन नतकधिं नगेतक ।
०
धिननात कगेतक धिरधिरकिटतक धाऽतिरकिटतक । धा'' ५०
३ x

४.४.२९ ''दोधारी गत तिस्त्र जाति समा यति रचना - डॉ. गौरांग भावसार

तकतकतक तकतकतक नगनगनग नगनगनग ।
x
धाऽधिंऽना धाऽधिंऽना तिटतिटतिट तिटतिटतिट ।
२
तकीटधाऽन तकीटधाऽन धा तीं ना धा तीं ना ।
०
धिनघिडनग धिनघिडनग धाऽघिडनग धाऽघिडनग । धा'' ५१
३ x

४.४.३० ''युगालबंध / दोधारी गत ताल - एकताल तिस्त्र जाति

ताऽनधिकिट ताऽनधिकिट। तकिटधिकिट तकिटधिकिट ।
x ०
धागेतिटकत गदिगनतागे । तिटकतगदि गनधाऽदिंऽ।
२ ०
धागेतिटकत गदिगनतागे । तिटकतगदि गनधाऽदिंऽ।
३ ४
ताऽतिटकत गदिगनधाऽ । ताऽतिटकत गदिगनधाऽ।
x ०
तकिटधिकिट तकतिटकिट । तकिटधिकिट तकतिटकिट।
२ ०
धाऽकिटतक धिकिटधाऽन । धाऽकिटतक धिकिटधाऽन । धीं'' ५२
३ ४ x

४.४.३१ ''गत ताल - त्रिताल

धाऽधिन धिनधिन तक् घेघे त्रकधिन ।
x
तकिटधा त्रकधिन घिडनग तिनगिन ।
२
केत्रकति किटकिड नगतागे तिरकिट ।
०
धागेनधा त्रकधिन धागेत्रक तिनागिन । धा'' ५३
३ x

४.४.३२ दोमुँही गत ताल - त्रिताल रचना - उ. चुडियाँवाले इमाम बख्श खाँसाहब
डॉ. गौरांग भावसारजी से प्राप्त

धिंऽनधिं ऽनतक तकीटत किटतक ।
x
धात्रकधि किटतक गद्दींऽता घिडनग तिरकिट।
२
धाऽति कतिटधा त्रकधेत् तगेऽन्न ।
०
धाऽगेगे नानाकत् धिंऽनधिं ऽनतक । धा
३ x

४.४.३३ अनागत गत ताल - त्रिताल गुरुवर्य पं. नारायण जोशीजी से प्राप्त

दिंऽग दिं ऽगतक दिगनदि गनतक ।
x
धिंतिरकिटतक ता गदिंऽता किटतक ता ।
२
ऽधादी कत्तिट धा त्रकधेत् ।
०
तगऽन्न धा घिना कत् । ऽ
३ x

४.४.३४ अनागत गत श्री. चिराग सोलंकी से प्राप्त

४.४.३४.१ अनागत

दिंऽग दिं ऽगतक दिगनदि गनतक ।
x
धात्रकधि किटकत गदींऽता केतिर किटतक ।
२
धाती कत् ऽ तीट धा त्रकधेत् ।
०
तगऽन्न धा ऽ घेघे नानाकत् । ऽ धीं धीं ना
३ x

४.४.३४.२ अनागत

दिंऽग दिं ऽगतक दिगनदि गनतक ।
x
धात्रकधि किटकत गदींऽता केतिर किटतक ।
२
धातीकत् तीटधाऽ त्रकधेत् तगऽन्न ।
०
धा घेघे नानाकत् ऽकत् ऽकत् । ऽ धीं धीं ना
३ x

४.४.३४.३ अनागत

धीरधीरकिटतक ताऽतिरकिटतक धीरधीरकिटतक तकिट धा ।
x
ऽ घिड नगधिन धागेत्रक तिनागिन ।
२
कति टधा त्रक धिन ।
०
घि ड नग धिरधिरकत् । ऽ धीं धीं ना
३ x

४.४.३४.४ अनागत

धीरधीरकिटतक ताऽतिरकिटतक धीरधीरकिटतक तकिट धा ।
x
ऽ घिड नगधिन धागेत्रक तिनागिन ।
२
कति टधा त्रक धिन ।
०
तिटतिट घेघेतिट कत् धा धीरधीर कत् । ऽ धीं धीं ना
३ x

४.४.३५ ''गत

रचना - पं. भाई गायतोंडे

तकिटतकिट धिनघिडनग तकिटतकिट धिनघिडनग ।
x
धिनघिडनग धिनघिडनग धिनगिनधागे त्रकतूनाकता ।
२
तकिटतकिट तिनकिडनग तिनगिन तागे त्रकतूनाकता ।
०
धीरधीरकिटतक ताऽतिरकिटतक तक्डां धाता । धा'' ५४
३ x

४.४.३६ दहेज गत / तिहाई गत

रचना - उ. बख्शू खाँसाहब

गुरुवर्य पं. नारायण जोशीजी से प्राप्त

धीऽक्ड धींता गद्दी घिडनग धागेत्रकधिनाघिड नगदिंगदिनागिन ।
x
धागेतिटघिडाऽन धागनागदिंगनग कतिटताकिडनग तिनगिनतागेत्रक ।
२
तूनागिनधिनगिन धागेत्रकधिनागिन तिनगिनतागेत्रक तूनागिनधिनगिन ।
०
धागेत्रकधिनागिन तिनगिनतागेत्रक तूनागिनधिनगिन धागेत्रकधिनागिन । धा
३ x

अन्त में एक बोलपंक्ति तीन बार आयी है, इसलिए इसे तिहाई गत कहते है। यह गत उ. हाजीसाहब को उनके ससुर उ. बख्शूखाँ से दहेज में मिली थी।

४.४.३७ ''चौधारी गत ताल - त्रिताल रचना - उ. हाजी विलायत अली खाँसाहब

तकतक तकतक धिनगिन धिनगिन ।
x
धिनगिन धिनगिन नगनग नगनग ।
२
धिरधिरकिटतक धिरधिरकिटतक धिरधिरकिटतक धिरधिरकिटतक ।
०
धिरधिरकिटतक धिरधिरकिटतक धिरधिरकिटतक धिरधिरकिटतक । धा'' ५५
३ x

४.४.३८ गत डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धगिनध गिनधाऽ धाऽघेघे नगधिन । गिनधागे नागेधिन धगिनधा गेदिगिन ।
x २
तकतिन गिनतिन तगिनता ऽकधाऽ । धाऽघेघे नगधिन कतकघे नगघेन ।
० ३
तकतिन किनताऽ ताऽकेके नकतिन । किनताके नाकेतिन तकिनता केतिकिन।
x २
तकतिन गिनतिन तगिनता ऽकधाऽ । धाऽघेघे नगधिन कतकघे नगघेन । धा
० ३ x

४.४.३९ चौधारी गत ताल - त्रिताल रचना - उ. अमीर हुसेन खाँसाहब

तकिटधिकिट तकिटधिकिट तकिटधिकिट तकिटधिकिट ।
x
धिनधिनधिन धिनधिनधिन धिनधिनधिन धिनधिनधिन ।
२
नगनदिगन नगनदिगन नगनदिगन नगनदिगन ।
०
तक्धिंतिरकिटतक तक्धिंतिरकिटतक तक्धिंतिरकिटतक तक्धिंतिरकिटतक।
३
तकिटतिकिट तकिटतिकिट तकिटतिकिट तकिटतिकिट ।
x
धिनधिनधिन धिनधिनधिन धिनधिनधिन धिनधिनधिन ।
२

नगनदिगन नगनदिगन नगनदिगन नगनदिगन ।
०
तक्धिंतिरकिटतक तक्धिंतिरकिटतक तक्धिंतिरकिटतक तक्धिंतिरकिटतक। धा'' ५६
३ x

यह खाली-भरी की चौधारी गत ठाय -दून में बजायी जाती है। इस गत में जोरदार एवं नाजूक बोलों का समन्वय हुआ है।

४.४.४० गत डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धेत्ऽधा तिरकिटतक धाऽतिरघेड नगदिनतक ।
x
धाऽतिरघेड नगदिनतक तिरकिटतक ताऽतिरकिट ।
२
किटतकताऽ तिरकिटतक किटतकताऽ तिरकिटतक।
०
धाऽतिरघेड नगदिनतक धाऽतिरघेड नगदिनतक ।
३
तेत्ऽता तिरकिटतक ताऽतिरकेड नकतिनतक ।
x
ताऽतिरकेड नकतिनतक तिरकिटतक ताऽतिरकिट ।
२
किटतकताऽ तिरकिटतक किटतकताऽ तिरकिटतक।
०
धाऽतिरघेड नगदिनतक धाऽतिरघेड नगदिनतक । धा
३ x

४.४.४१ फरद गत / गेंदउछाल गत / दोमुँही गत

रचना - उ. हाजी विलायत अली खाँसाहब गुरुवर्य पं. नारायण जोशीजी से प्राप्त

धागत्तकिट धा तिरकिटतक तेत्धीरधीर किटतकतेत्
x
दीऽ तकती ऽतीऽती ।

ऽनाऽडना ऽडनग तिरकिट
२
गिद्दीघिंना धागेतिट ।
घिंनाऽक्ड गद्दीऽगन
०
धागिनधात्रक धिनागदीगन ।

ताक्डांतीती नाऽडनाऽडनाऽतिरकिट
३
धागत्तकीटधातिरकिटतक तेत्धीरधीरकिटतकतेत् । धा
x

४.४.४२ गत डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

कऽत धेतेटे कतग दिगन । धाऽ तिरकिट धेतेटे कतग दिगन ।
x २
नडन डनड तिनति नतिन । धाऽ तिरकिट धेतेटे कतग दिगन ।
० ३
कऽत तेतेटे कतक तिकन । ताऽतिरकिट तेतेटे कतक तिकन ।
x २
नडन डनड तिनति नतिन । धाऽ तिरकिट धेतेटे कतग दिगन । धा
० ३ x

४.४.४३ खाली-भरी गत ताल - त्रिताल

तिटघिन धात्रकधि किटघिन धेत् ।
x
तक्घिन धात्रकधि किटघिन धेत् ।
२
घें धा घें धा ।
०
धीरधीरकिटतक ताऽतिरकिटतक धीरधीरकिटतक ताऽतिरकिटतक ।
३
तिटकिन तात्रकति किटकिन तेत् ।
x
तक्घिन धात्रकधि किटघिन धेत् ।
२

घे धा घें धा ।
०
धीरधीरकिटतक तातिरकिटतक धीरधीरकिटतक तातिरकिटतक । धा
३ x

४.४.४४ ''गत जाति-तिस्त्र रचना - उ. मुनीर खाँसाहब

धी घिडनग तक्डान् धात्रकधिकीट कतगदिगन ।
x
धात्रक धिकीट कतग दिगन ।
२
नगनगनग तकतकतक धात्रकधिकीट कतगदिगन ।
०
घिंनडान तकघिडान धात्रकधिकीट कतगदिगन । धा'' ५७
३ x

४.४.४५ गत डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

कऽत धेतेटे कतग दिगन । धाऽतिरकिट धेतेटे कतग दिगन ।
x २
धाऽति ऽधाऽ गिदिंऽ नाऽड । धाऽतिरकिट धेतेटे कतग दिगन ।
० ३
तकत कतिन गिनत कतिन । ताऽतिरकिट तेतेटे कतक तिकन ।
x २
धेत्ऽधेत् ऽतिरकिट धेत्ऽत डाऽन । धाऽतिरकिट धेतेटे कतग दिगन ।
० ३
कऽत तेतेटे कतक तिकन । ताऽतिरकिट तेतेटे कतक तिकन ।
x २
ताऽति ऽताऽ किटिंऽ नाऽड । ताऽतिरकिट तेतेटे कतक तिकन ।
० ३
तकत कतिन गिनत कतिन । ताऽतिरकिट तेतेटे कतक तिकन ।
x २
धेत्ऽधेत् ऽतिरकिट धेत्ऽत डाऽन । धाऽतिरकिट धेतेटे कतग दिगन । धा
० ३ x

४.४.४६ ''अनाघात गत ताल - एकताल रचना - उ. अमीर हुसेन खाँसाहब

कत्तधाऽघिडनगधिनतक नातिरकिटतकतेत् ।
x
घिटतगतेत्ऽघिडनग नातिरकिटतकधिरधिरकत् ।
०
धिरधिरकिटतकताऽतिरकिटतक ताऽतिरकिटतकधिरधिरकत् ।
२
ऽध्धाघिडनगधिनतक तातिरकिटतकधिरधिरकत् ।
०
ऽध्धाघिडनगधिनतक नातिरकिटतकधिरधिरकत् ।
३
ऽध्धाघिडनगधिनतक नातिरकिटतकधिरधिरकत् । धा'' ५८
४ x

४.४.४७ चक्रदार गत ताल -त्रिताल रचना - उ. अमीर हुसेन खाँसाहब

गद्दि घिडनग	नगतिरकिटतक	तिरकिटतकताऽ	कऽत्तधा ।
x			
तिटकतगदिगन	धाऽ नातिर	किटतकधिरधिर	कत् धिरधिर ।
२			
कत् धिरधिर	कत् नाऽतिर	किटतकधिरधिर	कत् धिरधिर ।
०			
कत् धिरधिर	कत् नाऽतिर	किटतकधिरधिर	कत् धिरधिर ।
३			
कत् धिरधिर	कत्	गद्दि घिडनग	नगतिरकिटतक ।
०			
तिरकिटतकताऽ	कऽत्तधा	तिटकतगदिगन	धाऽ नातिर ।
२			
किटतकधिरधिर	कत् धिरधिर	कत्	ऽनातिर ।
०			
किटतकधिरधिर	कत् धिरधिर	कत्	ऽनातिर ।
३			
किटतकधिरधिर	कत् धिरधिर	कत्	गद्दि घिडनग ।
x			
नगतिरकिटतक	तिरकिटतकताऽ	कऽत्तधा	तिटकतगदिगन ।

२
धाऽ नातिर किटतकधिरधिर कत् ऽनातिर ।
०
किटतकधिरधिर कत् ऽनातिर किटतकधिरधिर । कत्'' ५९
३ x

४.४.४८ ''अतीत गत ताल - त्रिताल रचना - उ. अमीर हुसेन खाँसाहब

घिनाकतकतघिंऽ ऽधा तिरकिटतकतिरकिट
x
धाऽ किटतक नातिरकिटतकतेत् ।

ताऽकिटतकतिरकिटतक तिटकताऽन्धाऽधिंऽधा
२
कऽत्तधाऽकिट धाऽधिंधाकत् ।

ऽध्धा किटतकदिंग्ड धाऽकिटतकदिंग्डधाऽ
०
ऽध्धाकिटतक दिंग्डधाऽ ऽध्धाकिटतक दिंग्ड ।

धाऽकिटतकदिंग्डधाऽ किटतकदिंग्डधाऽ
३
ऽध्धाकिटतकदिंग्ड धाऽकिटतकदिंग्डधाऽ ।
किटतकदिंग्डधाऽ धीं धीं ना।'' ६०
x

४.४.४९ गत ताल - त्रिताल गुरुवर्य पं. नारायण जोशीजी से प्राप्त

दी घिडनग तक्घिडनग धिनघिडनग तिरकिटतक ।
x
धिनगिनधिन गिनतकतक धिनघिडनग तिरकिटतक ।
२
ताती ताक्डां तिनकिडनग तिरकिटतक ।
०
धाऽ ऽता ऽदी घिडनग । धा
३ x

४.४.५० ''गतटुकड़ा झूलना छंद जाति - मिश्र

रचना - उ. चुडियावाले इमाम बक्ष खाँसाहब पं. हिमांशु महंतजी से प्राप्त

तकिटधिनधिन तकिटनागेनागे

x

धाकिट धागेधागे तिरकिटतकताऽ ।

तिरकिटतक धाऽतिरकिटतक तिरकिटतक धीरधीरकिटतक

२

धागेन धागेतिट धीरधीरकिट धाऽतिरकिटतक ।

तिरकिटतक धीरधीरकिटतक धागेन धातींनाडा

०

धाऽगे धाऽ तिरकिटतक तिरकिटतक धीरधीरकिटतक ।

धागेन धातींनाडा धाऽगे धाऽतिरकिटतक

३

तिरकिटतक धीरधीरकिटतक धागेन धातींनाडा । धा'' ६१

x

४.४.५१ गत डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धाऽक्र	धेतेटे	धाऽतिरकिट	धेतेटे ।

x

कऽत	धेतेटे	कतग	दिगन ।

२

धिग्गि	दाऽन	धिग्ग	दिगन ।

०

धाऽतिरकिट	धेतेटे	कतग	दिगन।

३

कऽतिरकिट	धेतेटे	कऽतिरकिट	धेतेटे।

x

धेटेधे	टेधेटे	तिरकिटतक	तिरकिटतक ।

२

धेत्ऽधेत्	ऽ तिरकिट	धेत्ऽत	डाऽन ।

०

धाऽतिरकिट	धेतेटे	कतक	तिकन ।

३

ताऽक्र तेतेटे ताऽतिरकिट तेतेटे।
x
कऽत तेतेटे कतक तिकन ।
२
तिक्कि ताऽन तिक्क तिकन।
०
ताऽतिरकिट तेतेटे कतक तिकन ।
३
कऽतिरकिट धेतेटे कऽतिरकिट धेतेटे ।
x
धेटेधे टेधेटे तिरकिटतक तिरकिटतक ।
२
धेत्ऽधेत् ऽ तिरकिट धेत्ऽत डाऽन ।
०
धाऽतिरकिट धेतेटे कतक दिगन । धा
३ x

४.४.५२ दुमुँही गत ताल - एकताल रचना - डॉ. केदार मुकादम

धिनता ऽधिन । धिनघिड नगधिन । ता क्रधाऽन ।
x ० २
ताऽकत् गदींऽन्न । किटतक ताऽधिन । घिडनग धा धिरधिर ।
० ३ ४
किटतकतकिट धाऽघिन। ताऽ धिन घिडनग । धा धिरधिर किटतकतकिट ।
x ० २
धाऽघिन ताऽधिन। घिडनग धाधिरधिर। किटतकतकिट धाऽघिन । धा
० ३ ४ x

४.४.५३ चक्रदार ताल - झपताल डॉ. केदार मुकादमजी से प्राप्त

तिरकिटतकधिर धिरधिर कत् ।
x
धिरधिरकिटतक धाऽतिरकिटतक तिटतिट।
२
कत्ता धाऽक्रधा।
०
ऽनधाऽ कतिट धा ऽकऽत्त।
३
धी ना कतिट धा।
x
ऽकऽत्त धी ना कतिट धा ।
२
ऽकऽत्त धीना ।
०
तिरकिटतकधिर धिरधिरकत् धिरधिरकिटतक।
३
धाऽतिरकिटतक तिटतिट।
x
कत्ता धाऽक्रधा ऽनधाऽ ।
२
कतिट धा ऽकऽत्त।
०
धीना कतिट धा ऽकऽत्त ।
३
धीना कतिट धा ।
x
ऽकऽत्त धी ना तिरकिटतकधिर ।
२
धिरधिरकत् धिरधिरकिटतक ।
०
धाऽतिरकिटतक तिटतिट कत्ता ।
३

धाऽक्रधा ऽनधाऽ ।
x
कतिटधा ऽकऽत्त धी ना ।
२
कतिटधा ऽकऽत्त।
०
धीना कतिट धा ऽकऽत्त। धीं
३ x

४.४.५४ दुपल्ली गत डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

तक धिन तकि टधि । नागे धिन घेड नग ।
x २
दिनतक तकिटधा ऽडधाऽ घेडनग । धिनगिन तकधिन गिनतक धिनगिन।
० ३
तक तिन तकि टकि । नाके तिन केड नक ।
x २
दिनतक तकिटधा ऽडधाऽ घेडनग । धिनगिन तकधिन गिनतक धिनगिन। धा
० ३ x

४.४.५५ दहेज गत ताल - झपताल डॉ. केदार मुकादमजी से प्राप्त

तिरकिटतक तिरकिटतक । तक्घिडाऽन धाधींना क्रधीं ।
x २
नानाना नाऽकिटतक । तकतिरकिट धगत् तकीट ।
० ३
धागेति रकिट । धागेति टधागे त्रकति ।
x २
नाकिन धिनगि । नधिन गिनन गतक ।
० ३
धिनगि नधागे । त्रकति नाकिन धगऽत्त ।
x २
किट धाऽतिर किटतक तेत् । धगत् दी गननागे दिगनागे ।
० ३
तिटकता कत् । घिनाक दींदीं दींक्र ।
x २
धाधा धाक्र । धींधीं धीं क्र धाधा । धीं
० ३ x

४.४.५६ तिपल्ली गत डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धेत्ऽध डाऽन धागेऽ दिगिन ।
x
क्रधेऽ धेतेटे कतग दिगन ।
२
क्रधेतेटे क्रधेऽधे तेटेकत गदिगन ।
०
धेत्ऽधडाऽन धागेऽदिगिन क्रधेऽधेतेटे कतगदिगन । धा
३ x

४.५ बनारस घराना

बनारस घराना लखनऊ की देन है। बनारस घराने के प्रवर्तक पं. राम सहाय मिश्र बनारस के एक संगीत व्यवसायी कथ्थक परिवार के थे । उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिताजी एवं चाचाजी से प्राप्त की थी । उसके पश्चात् लखनऊ घराने के खलिफा उ. मोदू खाँ से कई वर्षों तक लखनऊ में रह कर शिक्षा प्राप्त की और बनारस लौट कर तबले का प्रचार किया। उन्होंने तबले की वादनशैली में परिवर्तन किया एवं नई रचनाओं का सृजन किया। कालान्तर में अपनी एक स्वतंत्र शैली निर्माण की, जो बनारस घराने के नाम से पहचानी जाने लगी।

बनारस घराने के तबलावादकों ने खुले बाज का स्वीकार किया। यह लखनऊ घराने का शागिर्द घराना है। इस घराने के तबलावादकों ने अपनी विशाल दृष्टि से दिल्ली, लखनऊ इन दोनों घरानों की वादनपद्धति का सूक्ष्म रूप से अध्ययन किया। गत, गतपरन, टुकड़े, चक्रदार इन रचनाप्रकारों में लव का और पेशकार, कायदा, रेला इन रचनाप्रकारों में किनार का सुयोग्य प्रयोग किया। खुले-बंद बाज की विशेषताओं को ध्यान में लेकर अपनी अलग वादनशैली निर्माण की। इस घराने में दायाँ-बायाँ, खुले हाथ से जोरदार रूप में बजाने की पद्धति प्रचलित है।

इस घराने के कलावंतों या तबलावादकों पर नबाबी परम्परा का प्रभाव होने के कारण वे बहुत ही आदरकारी एवं विनम्र थे। गति और स्पष्टता बनारस घराने की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। इस

घराने के वादक बहुत इच्छाशक्ति और अथक परिश्रम लेने की उम्मीद रखते है। इस मेहनत के कारण दिल्ली के दो उँगलियों के कायदे उनके हाथों से जबरदस्त गति में बजते है। अथक परिश्रम से प्राप्त की हुई हाथ की अकल्पनीय तैयारी, दृढ संकल्प, बल एवं तबलावादन का सौंदर्यपूर्ण विन्यास इन गुणों के कारण इस घराने के कलाकारों का वादन सभी को आकर्षित कर लेता है।

बनारस घराने के वादकों ने अनेक सुंदर रचनाएँ बनाई हैं। बनारस घराने में मुख्यत: दिल्ली के अधिकाधिक कायदे बजते हैं, लेकिन निकास एवं विस्तार की विचारधारा दिल्ली घराने से भिन्न है। व्यक्तिश: बनारस के कायदे सीधे एवं तेज गति से बजाने में आसान होते हैं। गति की प्रधानता के कारण इस घराने के तबलावादक ऊँचे स्वर के (टीप के) तबले का इस्तेमाल करते हैं। उनकी बायाँ रखने की रीति बाकी घरानों से भिन्न है याने स्याही कलाई की ओर एवं मैदान दर्शकों की ओर रहता है। इसी कारण ये वादक जो मींडकाम, घीसकाम करते हैं, उसमें एक अलग ढंग के सौंदर्यपूर्ण नादों का अनुभव मिलता है। बायें को घसीट कर लम्बी मींड निकालने की प्रथा बनारस घरानें में देखने को मिलती है। बनारस घराने में उठान, गत, परन, मोहरे, मुखड़े, टुकड़े, रेला, लग्गी, लड़ी, बाँट, चक्रदार आदि का प्रयोग किया जाता है। फरद गत बनारस घराने की प्रमुख विशेषता है। इसमें जनानी तथा मर्दानी गतें काफी प्रसिद्ध हैं।

इस घराने में वादन का आरम्भ उठान से होता है। इस बाज का पेशकार लग्गी के ढाँचे पर आधारित होता है। बनारस घराने का बाँट वादनप्रकार बहुत सौंदर्यपूर्ण है। 'धाडाकधिकिटधाति ताताकधिकिटधाति', 'धाडाधातिकिटताति धाडाधातिकिनताति ताडातातिकिटधाति धाडाधातिघिनधाति', 'धातिकेधिनधिनाति तातिकेधिनधिनाति' इसी प्रकार के छोटे-छोटे ४-४ मात्राओं के बोलसमूहों का प्रयोग बनारस घरानें में अधिक मात्रा में किया जाता है। एक उँगली से बजाए जानेवाले तीनताल के ठेके पर प्रभुत्व यह बनारस घराने की एक विशेषता है।

इस बाज में गिरगिन्, दिंऽग्ड, धेत्तान्, घ्डाँ, धडाऽन, केतिरकिटतक, कताकता, किटतकदिनगिन तथा किनार पर तकतक, दो उँगलियों का धिरधिर आदि बोल होते हैं।

पं. राम सहाय ने अनुज पं. जानकी सहाय, भतीजे पं. भैरव सहाय तथा शिष्य पं. बैजू महाराज, पं. परतप्पू महाराज आदि को विद्या सिखाई थी। उन्होंने अपने भाई पं. गौरी सहाय के पुत्र पं. भैरव सहाय को पुत्रवत माना और दीर्घ शिक्षा देकर अपने घराने का उत्तराधिकारी बनाया था। पं. भैरव सहाय के पुत्र पं. बलदेव सहाय, पौत्र पं. भगवती सहाय, पं. लक्ष्मी सहाय, पं. दुर्गा सहाय, प्रपौत्र पं. शारदा सहाय, पं. मंगला सहाय, पं. रामशंकर सहाय सभी उच्चस्तरीय कलाकार रहे हैं। इसी परम्परा में पं. बाचा मिश्र, पं. बिक्कु महाराज, पं. कंठे महाराज, पं. किशन महाराज, पं. सामता प्रसाद, पं. कुमार बोस, पं. गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव, उ. अता हुसेन खाँ आदि सैंकडो नाम लिए जाते हैं। पं. राम सहाय के शिष्य पं. भगत जी, पं. भगत जी के प्रमुख शिष्यों में पं. अनोखेलाल मिश्र का नाम जग विख्यात है। पं. अनोखेलाल मिश्र 'ना धिं धिं ना' के जादूगर कहे जाते थे।

बनारस घराने की कुछ बन्दिशें यहाँ प्रस्तुत हैं।

४.५.१ ''पंचगब्बा गत ताल - एकताल पं. हिमांशु महंतजी से प्राप्त

कत धा	ऽ कत ।	धा किटतक	दिगनग ।
x		०	
धाधा	दी गिन।	धादी	गिनधागे ।
२		०	
ऽ धीर	धीरधीर कत् ।	ऽ धीर	धीरधीरकिटतक।
३		४	
धीरधीरकिटतक	तकीटतकीट ।	धाऽतिरकिटतक	तक्डांधाता ।
x		०	
तागेनता	गेन धा ।	तिरकिट धा	तिरकिट तक ।
२		०	
धागिनति	नकधिन ।	ऽताऽक	ऽधिर धिरकिट । धीं'' ६२
३		४	x

'पंचगब्बा' यह बनारस घराने का शब्द है। पंचगब्बा गत याने ऐसी रचना जिसमें पाँच घरानों का समावेश है। सभी घराने की एक Authentic Phrase लेकर उनको मिलाकर पं.

अनोखेलालजी ने बनाई हुई यह रचना है। इसमें स्पष्ट रूप से रौद्र रस है और बाकी रसों का भी समावेश है।

४.५.२ मर्दानी गत

एकमात्र बनारस घराने में ही मर्दानी गतें हुई हैं। मर्दानी गतों में ऐसा रूप नजर आता है, जिसमें धीरगंभीर, आक्रमक, बिभत्स और दमदार बोलों का चयन किया हो और जो सुनने पर कुछ अलग, दहाड (गर्जना) जैसे होता है।

४.५.२.१ ''मर्दानी गत ताल - त्रिताल पं. हिमांशु महंतजी से प्राप्त

कऽत्त धा धागिन धा ।
x
तिरकिटतक ता कताग दिगन ।
२
धात्रक धिनाके धिनधि नागिन ।
०
धेऽत्त डाऽन कताग दिगन । धा'' ६३
३ x

४.५.२.२ ''मर्दानी गत तालत्रिताल पं. हिमांशु महंतजी से प्राप्त

क्डधेत् ताऽन धेत्ता धेत्ता क्डधाऽन ।
x
धाऽन धागिन ऽधि नधिन धाऽन धागिन ऽधि नधिन ।
२
धाऽ केतक दिगन नागेतिरकिट तकताऽन धा ऽधा ।
०
धिंधिं नाऽ किटतक तिरकिटतक धिरधिरकिटतक
३
धागेन तिरकिटतक क्डर्धिनातिट । धा'' ६४
x

इस मर्दानी गत में बिभत्सता है, रौद्र है, गुस्सा भी है। इन गतों में कहीं भी शृंगार या करूण रस नहीं दिखता।

४.५.३ ''बढैय्या गत ताल - त्रिताल पं. हिमांशु महंतजी से प्राप्त

किट । धाऽनधाकिट धित्तलाऽन तीऽकत्ता घेघेत्ताऽन ।
x
धा घेघेत् ताऽन धा घेघेत्ताऽन धा ।
२
ताऽन धा तकिट धा तिक् कडाऽन धाऽऽक्ड ।
०
धाऽनधाऽन ऽक्डधाऽन धाऽनऽक्ड धाऽनधाऽन । धा'' ६५
३ x

इस गत में चाल एक चल रही है, लेकिन बोल ऐसे चल रहा है, जो सवाया चल रहा है ऐसा आभास होता है।

४.५.४ ''दर्जे की गत ताल - त्रिताल रचना पं. शारदा सहायजी
पं. हिमांशु महंतजी से प्राप्त

धा घिनक तकिट घिनक ।
x
धात्रक घिकिट धिनाग दिगन ।
२
नगिन नगिन तकिट घिनक ।
०
धात्रक धिकिट धिनाग दिगन ।
३
धाऽऽघि नकघिन तकिटघि नकघिन ।
x
धात्रकधि किटघिन धिनागिना गदिगन ।
२
नगिनन गिनघिन तकिटघि नकघिन ।
०
धात्रकधि किटघिन धिनागिना गदिगन ।
३

धा घिनक तकिटघिनक धात्रकधिकिट धिनागदिगन ।
x
नगिननगिन तकिटघिनक धात्रकधिकिट धिनागदिगन ।
२
धा घिनक तकिटघिनक धात्रकधिकिट धिनागदिगन ।
०
नगिननगिन तकिटघिनक धात्रकधिकिट धिनागदिगन ।
३
धाऽऽघिनकघिन तकिटघिनकघिन धात्रकधिकिटघिन धिनागिनागदिगन ।
x
नगिननगिनघिन तकिटघिनकघिन धात्रकधिकिटघिन धिनागिनागदिगन ।
२
धा घिनक तकिट घिनक धात्रक धिकिट धिनाग दिगन
०
नगिननगिन तकिटघिनक धात्रक धिकिट धिनाग दिगन ।
धा घिनक तकिट घिनक धात्रक धिकिट धिनाग दिगन
३
नगिननगिन तकिटघिनक धात्रक धिकिट धिनाग दिगन । धा'' ६६
x

४.५.५ गतटुकड़ा जाति - मिश्र झूलना छंद पं. हिमांशु महंतजी से प्राप्त

धाऽग धाऽतिरकिटतक धा तिर किटधा धिटक धिटधाति धिटक धाधींनाऽ ।
x
धिटक धिटधाति धिटक धाधींनाऽ तकिट तीं तीं नाऽतीनाकिटतक ।
२
ताकिटतक धीरधीरकिटतक ताकिटतक धीरधीरकिटतक
०
धाऽके धिनाकिटतक ताकिटतक धीरधीरकिटतक ।
ताकिटतक धीरधीरकिटतक धाऽके धिनाकिटतक
३
ताकिटतक धीरधीरकिटतक ताकिटतक धीरधीरकिटतक। धागेनधागेतिट'' ६७
x

पहले लोग छंद गाते थे। संगीत में गिनने के बजाय विविध छंदों में वादन होता था। यह झूलना छंद की गत है।

४.५.६ ''फरद गत ताल - त्रिताल रचना - पं. शत्रुघन महाराज

पं. आमोद दंडगेजी से प्राप्त

धाऽघिडनगतक घिडाऽनधागेतिट घिडनगधिनतक नगतिरकिटतक ।
x
तिरकिटतकतागे तिरकिटघिडाऽन धाऽतिरकिटघिड्डा ऽनधाऽतिरकिट ।
२
घिडनगधीरधीर घिडनगधीरधीर घिडनगधिनतक नगतिरकिटतक ।
०
तिरकिटतकतागे तिरकिटघिडाऽन धाऽतिरकिटघिड्डा ऽनधाऽतिरकिट ।
३
ताऽकिडनगतक किडाऽनतागेतिट किडनगतिनतक नकतिरकिटतक ।
x
तिरकिटतकतागे तिरकिटघिडाऽन धाऽतिरकिटघिड्डा ऽनधाऽतिरकिट ।
२
घिडनगधीरधीर घिडनगधीरधीर घिडनगधिनतक नगतिरकिटतक ।
०
तिरकिटतकतागे तिरकिटघिडाऽन धाऽतिरकिटघिड्डा ऽनधाऽतिरकिट । धा'' ६८
३ x

४.५.७ ''जनानी गत ताल - त्रिताल

घेनगत किटगिन धागेत्रक धिनगिन । धाऽ ऽऽ धिनगिन त्रकधिन ।
x २
घेनगत किटगिन धागेत्रक धिनगिन । धिनगिन त्रकधिन धागेत्रक तनाकता ।
० ३
तिनतडा ऽनतिन धागेत्रक धिनगिन । धागेत्रक धिनगिन तिनतडा ऽनतिन ।
x २
धागेत्रक धिनगिन धागेत्रक धिनगिन । तिनतडा ऽनतिन धागेत्रक तिनकिन ।
० ३
केनकत किटकिन ताकेत्रक तिनकिन । ताऽ ऽऽ तिनकिन त्रकतिन ।
x २
केनकत किटकिन ताकेत्रक तिनकिन । तिनकिन त्रकतिन ताकेत्रक तूनाकता ।
० ३

तिनतडा ऽनतिन धागेत्रक धिनगिन । धागेत्रक धिनगिन तिनतडा ऽनतिन ।
x २
धागेत्रक धिनगिन धागेत्रक धिनगिन । तिनतडा ऽनतिन धागेत्रक धिनगिन। धा'' ६९
० ३ x

'जनानी' का शाब्दिक अर्थ है 'महिला' या 'स्त्री'। जनानी गतों में सामान्यत: मुलायम एवं उँगलियों से बजनेवाले वर्णों का प्रयोग किया जाता हैं।

४.५.८ ''लाहौरी गत / दोधारी गत आड लय ताल - त्रिताल

गीनाऽधाऽड गीनाऽधाऽड धागेनागेधिन धागेनागेधिन ।
x
तकिटधाऽड तकिटधाऽड तकधिनतक तकधिनतक ।
२
तकतकनड नडतकतक तेटेतेटेकत कतगदिगिदि ।
०
घेघेदिंऽदिंऽ घेघेदिंऽदिंऽ घेतिरकिटतकतेत्ऽ घेतिरकिटतकतेत्ऽ ।
३
कीनाऽताऽड कीनाऽताऽड ताकेनाकेतिन ताकेनाकेतिन ।
x
तकिटताऽड तकिटताऽड तकतिनतक तकतिनतक ।
२
तकतकनड नडतकतक तेटेतेटकत कतगदिगिदि ।
०
घेघेदिंऽदिंऽ घेघेदिंऽदिंऽ घेतिरकिटतकतेत्ऽ घेतिरकिटतकतेत्ऽ । धा'' ७०
३ x

इस लाहौरी गत में प्रयुक्त हर एक बोलसमूह दो-दो बार बजाया जाता है, अत: इसे दोधारी गत भी कहते हैं।

४.५.९ बनारस की पारम्पारिक गत ताल - त्रिताल

घिनाऽधा डऽधाऽ ऽऽऽधा ऽडधाऽ ।
x

घिन्नाकिटतक धाऽतिरकिटतक तिन्नाकिटतक ताऽतिरकिटतक।
२
क्डानतातिर किटतक घेडान धाऽतिरकिटतक ताऽतिरकिटतक।
०
दींऽनदी ऽनकत् तिरकिटतकताऽ ऽधेर धेरकिट। धा
३ x

खुले और बन्द बोलों का प्रयोग इस प्राचीन और पारम्पारिक गत में खूबसूरती से हुआ है।

४.५.१० ''फर्द गत बनारस घराना समा यति

धातिटधा तिटधागे तिटक्डधा तिटधागे ।
x
तिटतिट धागेतिट धातिटधा गदिगन ।
२
तागेतिट तिटतागे तिटतगि ऽनधेत् ।
०
धेततगि ऽन किटतक तिरकिटतकतक धिरधिरकिटतक। धा'' ७१
३ x

४.५.११ ''उडाऩ की फर्द बनारस घराना

गदिंऽन किटतक धाऽ तिरकिटधाऽतिर किटधाऽ घिडनग ।
x
धाऽऽऽतिरकिट धाऽतिरकिटधाऽ घिडनगतिरकिट तकधिरकिटतक ।
२
नगनत कऽतिरकिटतक ताऽऽऽ ताऽघिडनगघिड ।
०
नगधाऽघिडनग तिरकिटतकधाऽ घिडनगतिरकिट तकधेरकिटतक। धा'' ७२
३ x

४.५.१२ गोपुच्छा गत डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धिन्ना किटतक तकघेडा ऽनधाऽ। धिन्ना किटतक घेडनग धाऽतेटे।
x २

घेडनग	दिनतक	घेडनग	तिरकिट ।	दींऽघेड	नगधाऽ	घेडनग	दिनतक ।
०				३			
तिरकिट	तकतिर	किटतक	तिरकिट ।	तिं	ऽ	ता	ऽ ।
x				२			
धा	ऽ	तेतू	ऽ ।	घेड	नग	तगि	ऽन ।
०				३			
तिन्ना	किटतक	तककेडा	ऽनताऽ ।	तिन्ना	किटतक	केडनक	ताऽतेटे ।
x				२			
केडनक	तिनतक	केडनक	तिरकिट ।	तींऽकेड	नकताऽ	केडनक	तिनतक ।
०				३			
तिरकिट	तकतिर	किटतक	तिरकिट ।	तिं	ऽ	ता	ऽ ।
x				२			
धा	ऽ	तेतू	ऽ ।	घेड	नग	तगि	ऽन । धा
०				३			x

४.५.१३ “मींड़ की गत बनारस घराना रचना - शम्भू महाराजजी

धागिनत	कीटघिन	धागिनधा	ऽडघिन ।
x			
नगधिन	धिनतक	त्रकतूना	किटतक ।
२			
ताऽ किटतक	ताऽ किटतक	तिरकिटतक	तिरकिटतकताऽ ।
०			
ऽ त्रक	धिं ऽ	किडनगतिरकिट	तकधिरकिटतक । धा” ७३
३			x

४.५.१४ फरद गत ताल झपताल डॉ. केदार मुकादमजी से प्राप्त

तिटक	तकतिट ।	तकतक	धिनधिन	धाऽत ।
x		२		
धाऽतिट	धाऽत ।	धाऽकतू	धादीगन	नातिटक ।
०		३		
तिटधा	क्डांधा ।	किटतक तीं	नाना किटतक	ताऽतिरकिटतक ।
x		२		
तकिट धा	ताधा ।	किटतक ता	तिरकिटतकताऽ	ऽधीर धीरकिट । धीं
०		३		x

इस गत की पहली आठ मात्राएँ झुलना छंद में बाँधी है।

४.५.१५ जनानी गत डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धा	धिनगिन	धागेत्रक	धिनगिन ।	धिनघडा	ऽनधिन	धागेत्रक	धिनगिन ।
x				२			
घेनगत	किटधिन	धागेत्रक	धिनगिन ।	धिनगिन	तकधिन	धागेत्रक	तूनाकत ।
०				३			
तिनतडा	ऽनतिन	ताकेत्रक	धिनगिन ।	धागेत्रक	तिनकिन	ताकेत्रक	धिनगिन ।
x				२			
धागेत्रक	तिनकिन	ताकेत्रक	धिनगिन ।	धागेत्रक	तिनकिन	ताकेत्रक	धिनगिन ।
०				३			
ता	तिनकिन	ताकेत्रक	तिनकिन ।	तिनकडा	ऽनतिन	ताकेत्रक	तिनकिन ।
x				२			
केनकत	किटतिन	ताकेत्रक	तिनकिन ।	तिनकिन	तकतिन	ताकेत्रक	तूनाकत ।
०				३			
तिनतडा	ऽनतिन	ताकेत्रक	धिनगिन ।	धागेत्रक	तिनकिन	ताकेत्रक	धिनगिन ।
x				२			
धागेत्रक	तिनकिन	ताकेत्रक	धिनगिन ।	धागेत्रक	तिनकिन	ताकेत्रक	धिनगीन । धा
०				३			x

४.६ पंजाब घराना

पंजाब घराना दिल्ली एवं पूरब दोनों घरानों के प्रभाव से पूरी तरह मुक्त है। इस घराने के बाज की निर्मिति एवं विकास पूर्णत: पखावज़ के आधार पर स्वतंत्र रूप में हुआ है। पंजाब मूलत: पखावज़ का घराना है। इसी परम्परा के श्रेष्ठ कलाकारों ने पखावज़ वादन की विद्या का तबला वादन में उपयोग किया और नयी रचनाओं के रूप में पंजाब की परम्परा तबलावादन में भी निर्माण की, इसलिए पंजाब घरानें के तबले पर पखावज़ का प्रभाव है। पखावज़ खुले हाथों से बजता है। इस घराने ने खुले बाज का स्वीकार किया है। पंजाब घरानें ने पखावज़ के खुले बोलों को बन्द करके तबलावादन का नया तंत्र निर्माण किया। इस घराने में हाथ का रखाव अन्य घरानों के हाथ के रखाव से थोडा अलग है। हाथ का रखाव बदल कर तबले पर बजाने योग्य नई निकास-शैली इस घराने ने

निर्माण की। पखावज़ का प्रभाव होने के कारण पंजाब शैली का तबला अत्यंत जोरदार, खुला एवं गतिमानता से प्रस्तुत होता है, इसलिए अत्यंत आकर्षक एवं सुननेवाले का मन मोह लेता है।

पंजाब घराने की वादनशैली में ठेके के बाँट का काम एवं लयकारी का गणित जटिल होता है।

रचनाओं की दीर्घता यह पंजाब घराने की खासियत है। पंजाब घराने में बजनेवाली लम्बछड गतें, गतपरन, चक्रदार, रेले आदि रचनाएँ दीर्घ पल्ले के रूप में बाँधी गई हैं। पंजाब में आजकल बजनेवाले कायदे, रेले की निर्मिति का श्रेय उ. अल्लारखाँ को जाता है। ऐसी खुद की असंख्य रचनाएँ उनके तबलावादन में होती थी। पंजाब के कायदे प्राय: लम्बे होते हैं। पंजाब मुख्यत: अपने गतों एवं रेलों के लिए प्रसिद्ध है।

दीपचंदी अंग के याने मिश्र जाति के पंजाबी चाले इस घराने की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। मिश्र जाति में बाँधी हुई एक से एक सुंदर गतें पंजाब घराने में हैं।

पूरे पंजे का उपयोग, थाप का प्रयोग, बोलों की निकास पद्धति, बायें पर मींडकाम, दायें-बायें का लचीलापन, क्लिष्ट लयकारी, विविध जाति, विभिन्न विश्राम की तथा विभिन्न आकृति की तिहाइयाँ, विविध चलन ये पंजाब की और कई विशेषताएँ हैं।

पंजाब घराने की रचनाओं में दुंगदुंग, धाड्धा, नगनग, धिटत, धडन्न, गदिन्नाड, धिनाड, धिडान्त, धेरधेरकिट, धाडागेन, आदि खास पंजाबी शब्दों का प्रयोग होता है। इन पर पंजाबी बोली भाषा की छाया होने के कारण इनकी पढन्त एवं इन बोलों को तबले पर सुनने में अवर्णनीय आनंद मिलता है।

पंजाब घराने के प्रवर्तक लाला भवानीदास थे। इसी परम्परा में शिष्य मियाँ कादिर बख्श (प्रथम), उनके पुत्र मियाँ हुसेन बख्श, पौत्र उ. फकीर बख्श एवं उ. फकीर बख्श के सुपुत्र उ. कादिर बख्श, शिष्य उ. करम इलाही, उ. मियाँ मलंग के नाम उल्लेखनीय हैं उ. कादिर बख्श के

शिष्यों में उ. लाल मुहम्मद खाँ, उ. शौकत हुसेन खाँ, उ. अल्लारखाँ और उ. अल्लारखाँ के सुपुत्र जगत् प्रसिद्ध व्यक्तित्व उ. झाकिर हुसेन ऐसी श्रेष्ठ तबला वादकों की परम्परा है।

पंजाब घराने की बन्दिशें आगे प्रस्तुत हैं

४.६.१ लाहोरी गत आडलय ताल -त्रिताल

डॉ. चिरायू भोळेजी के प्रबंध से डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धिनगिडाऽन	धिनगिडाऽन	धगनकधिन	धगनकधिन ।
x			
धात्रकधितिट	धात्रकधितिट	गेनकतिंऽन	गेनकतिंऽन ।
२			
नगकिटतक	नगकिटतक	धडऽनकिटतक	धडऽनकिटतक ।
०			
धाऽधाऽगिन	धाऽधाऽगिन	तिरकिटतकधिरकिटतक	तिरकिटतकधिरकिटतक । धा
३			x

४.६.२ गत रचना - पं. पुष्कररराज श्रीधर डॉ. गौरांग भावसारजी से प्राप्त

कऽत्तधिकीट	कतगदीगन	धात्रकधिकीट	कतगदीगन ।
x			
नगनगनग	केत्रकर्तींऽऽ	किडनगर्तींना	तकतकर्तीं ।
२			
किडनगर्तींना	तकतिरकिट	तकतिरकिट	तकतिरकिट ।
०			
धेत् धेत् धेत् धेत्	धेत्तगेन्न	धात्रकधितीट	कतगदीगन । धा
३			x

४.६.३ ‘‘अनागत पंजाब घराना समा यति

धिंनघिडा	ऽनधिंन	तकतऽ	ताऽनकत् ।
x			
तिटतिट	क्डधातिट	घिडाऽन	धाऽऽऽ ।
२			
धाऽनतिरकिट	ताऽतिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	धिरधिरकत्ऽ ।
०			

ऽऽऽऽ धिरधिरकत्ऽ ऽऽऽऽ धिरधिरकत्ऽ । धा'' ७४
३ x

४.६.४ मिश्र जाति गत ताल-एकताल

डॉ. चिरायू भोळेजी के प्रबंध से डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धिटकधिटधिरधिर धिरधिरकधीऽनादी ।
x
नादीकेतिटताऽन ताऽनकेताऽनकिटतक ।
०
तिरकिटतकताऽनधिरधिर धिरधिरकिटधाऽनधाऽन ।
२
धाऽऽऽकिटतक तिरकिटतकताऽनधिरधिर ।
०
घिरधिरकिटधाऽनधाऽन धाऽऽऽऽकिटतक ।
३
तिरकिटतकताऽनधिरधिर धिरधिरकिटधाऽनधाऽन । धीं
४ x

इस गत में अद्वितीय सौंदर्यमूल्य है। हर एक मात्रा का अन्तिम शब्द अगली मात्रा के प्रारम्भ स्थान में आता है। ऐसे वाक्यांशों के अनुक्रम को 'भेरु संधि' कहते हैं।

४.६.५ गत ताल - झपताल पं. यशवंतराव अष्टेकरजी से प्राप्त

नानाना नाकिटतक तागेतिरकिट घे ।
x
धीरधीरकिटतक तकिटधा कत्धीरधीर किटतकतकिट धा क्ड धान् धान् ।
२
धा क्डान् तक्घिडा ऽनतक
०
घिन्नडा ऽनता धाऽग दीगन धाधीरधीर किटतकतकिट। धीं
३ x

४.६.६ ''गत (पंजाबी चाला) जाति-मिश्र ताल-त्रिताल

रचना - उ. करीम बख्श पेरना

तततताऽऽकिटतक	तकिटधेत्धिरधिर
x	
किटतककिटतागदिगन	नगधेत्किटतकताऽ।
घेघेनकतघिन	नाऽकेतकधिन
२	
कताऽघिन्नाऽ	घिंतरानधाऽ।
घेघेनकेऽकिटतक	तकिटधेत्धेत्
०	
धडन्नाऽकिटतक	ताकिटतकधेत्कत ।
ताऽघिनाऽकिटतक	ताकिटतकधिरधिरकिटतक
३	
ताकिटतकधिरधिरकिटतक	ताकिटतकतक्डाँ । धा'' ७५

x

इस पंजाबी चाले के लयबंध चमत्कृतिपूर्ण हैं। बोलों के आघात में चढ़ाव-उतार है।

४.६.७ मिश्र जाति गत ताल - त्रिताल

डॉ. चिरायू भोळेजी के प्रबंध से डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

तकिटधिनधिन	नगेननानातिट	किटधितऽऽकिटधागे	तिटकताऽकिटतक।
x			
दींऽनदींनातिर	किटतकतक्डाँनधिरधिर	कतधिरधिरकिटतकधाऽ	दींऽऽगिंऽन्त।
२			
धाऽऽदीऽनातिर	किटतकतक्डाँनधिरधिर	कतधिरधिरकिटतकधाऽ	दींऽऽगिंऽन्त।
०			
धाऽऽदीऽनातिर	किटतकतक्डाँनधिरधिर	कतधिरधिरकिटतकधाऽ	दींऽऽगिंऽन्त। धा
३			x

४.६.८ ''लपेट गत ताल - झपताल पं. आमोद दंडगेजी से प्राप्त

कत् धा धागेतिटकिटधागे।
x
तिटकिटधंतधंत धंतधागेतिटकिट धागेतिट किटघे।
२
घेतरा ऽनधागे तिटकता कत् ।
०
कत् तिट घेघेतिट कताऽन धिना धिटकता। ऽ ना'' ७६
३ x

पंजाब की इस लपेट गत में तिसरी मात्रा जिस 'धंत' बोल से समाप्त होती है, वही 'धंत' बोल से चौथी मात्रा का प्रारम्भ होता है। वैसी ही क्रिया पाँचवीं - छठीं और सातवीं - आठवीं मात्राओं में है, इसको लपेट कहते है।

४.६.९ गत ताल - झपताल

डॉ. चिरायू भोळेजी के प्रबंध से डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धाऽगदिं ऽगनाति । टकऽत धाऽऽऽ गेनाऽधा ।
x २
ऽऽधाऽतिर किटतकतिरकिट। धाऽधिरधिर किटतकतिरकिट धाऽताऽ ।
० ३
धाऽतकिट धाऽधिरधिर । किटतकधिरधिर किटतकतकिट धाऽधिरधिर ।
x २
किटतकधिरधिर किटतकतकिट । धाऽधिरधिर किटतकधिरधिर किटतकतकिट । धीं
० ३ x

४.६.१० ''गत (पंजाबी चाला) जाति - मिश्र रचना - उ. अमीर हुसेन खाँसाहब

पं. आमोद दंडगेजी से प्राप्त

धात्रक धिटधिट तकिट ताकत्रक धिटता गदिगन धागेऽ दीगनधा ।
x
तिरकिटक ताऽत्रक धिटता गदिगन तातिट तागेत्रक धिटता गदिगन।
२

तिरकिटक ताऽत्रक धिटता गदिगन ऽऽत गदिगन धाऽत गदिगन ।
०
धागेन धागेधीन धागेन धागेधीन धागेन धागेधीन धागेन धागेधीन । धा'' ७७
३ x

४.६.११ दुपल्ली गत ताल - त्रिताल

डॉ. चिरायू भोळेजी के प्रबंध से डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

कतग ऽद्दीऽ घिनाऽ धाऽड ।
x
घिनग तकीट तगेंऽ नगेन ।
२
नागेना नागेना तिटक्ड धाऽधा ।
०
ऽदिऽ नकत ताऽधा ऽकिटतक ।
३
ताऽक तधाऽ गदिंऽ नाऽड ।
x
धाऽन कऽत किटधा ऽकत ।
२
किटधा ऽतकि टधाऽ कतकि ।
०
टधाऽ तकिट धाऽक तकिट ।
३
कतगऽद्दीऽ घिनाऽधाऽड घिनगतकिट तगेंऽनगेन ।
x
नागेनानागेना तिटक्डधाऽधा ऽदिंऽनकत ताऽधाऽकिटतक ।
२
ताऽकतधाऽ गदिंऽनाऽड धाऽनकऽत किटधाऽकत ।
०
किटधाऽतकि टधाऽकतकि टधाऽतकिट धाऽकतकिट । धा
३ x

४.६.१२ गत पंजाबी चाचर अंग ताल - त्रिताल रचना - पं. अरविंद मुळगावकर

धिटतकिटधिट किटधिटतकिट धात्रकधिटधिट तकिटतकत्रक ।
x
धात्रकधाऽधाति कधाऽधिटधिट धागेनधिटधागे नधिटतिनाकिन ।
२
तिरकिटतकतातिरकिटतक तिरकिटतकतकतिंतिरकिट
०
नगधेत्किटतकताऽऽ धिटताकिटधाऽऽ ।

नधिटकिटधाऽऽ तिरकिटतकतातिरकिटतक
३
तिरकिटतकतातिरकिटतक तिरकिटतकतातिरकिटतक । धा'' ७८
x

४.६.१३ गत ताल - त्रिताल

डॉ. चिरायू भोळेजी के प्रबंध से डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धननाऽधन नानाधिकिटगदि नागतदूंगधागे तिटकताऽधिट।
x
धिटकताऽतिट तिटकताऽधिक दिंऽनदिनागेगे दिनतऽनधऽ ।
२
नादिनदिनकिटतकदिंदिं किटतकतक्डांऽनधाऽधाऽ
०
धाऽऽऽतऽनधाऽ नादिनदिनकिटतकदिंदि ।

किटतकतक्डांऽनधाऽधाऽ धाऽऽऽतऽनधाऽ
३
नादिनदिनकिटतकदिंदिं किटतकतक्डांऽनधाऽधाऽ । धा
x

४.६.१४ पंजाबी गत ताल - त्रिताल

धागेऽतकिट धगनगधेन धागेतिरकिटधेन घेडनगधेन ।
x
घ्डांनऽधा धाऽघिडनग धेनघेडनग तिरकिटतुंनाकता ।
२

तकतेनतक ताऽकिडनक तककेडनक तिरकिटतगेन ।
०
धागेतिरकिटधेन घेडनगधेन घेडनगधेन घेडनगधेन । धा'' ७९
३ x

४.६.१५ दर्जेदार गत ताल - एकताल

डॉ. चिरायू भोळेजी के प्रबंध से डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धाऽनक तकधिन । कताकिट घेऽघेऽ । किटधाऽ नधाऽन ।
x ० २
घिरघिर किटतक । नतकेन घेऽघेऽ । घेऽधिंना किटतक ।
० ३ ४
तककिट ताऽतकि । टधितिट किटतक । तकधाऽ नतकिट ।
x ० २
धितिटकि टतकत । क्डधाऽन तकिटधि । तिटकिट तकतक ।
० ३ ४
धाऽनकतक धिनकताकिट । घेऽघेऽकिट धाऽनधाऽन ।
x ०
धिरधिरकिट तकेनतकेन । घेऽघेऽघेऽ धिनाकिटतक ।
२ ०
तककिटताऽ तकिटधितिट । किटतकतक धाऽनतकिट ।
३ ४
धिकिटकिटत कतकधाऽन । तकिटधितिट किटतकतक ।
x ०
धाऽनकतकधिन कताकिटघेऽघेऽ । किटधाऽनधाऽन धिरधिरकिटतके ।
२ ०
नतकेनघेऽघेऽ घेऽधिनाकिटतक । तककिटताऽतकि ऽधितिटकिटतक ।
३ ४
तकधाऽनतकिट धिकिटकिटतकत । क्डधाऽनतकिटधि तिटकिटतकतक ।
x ०
धाऽनकतकधिनकतातिट घेऽघेऽकिटधाऽनधाऽन ।
२

धिरधिरकिटतकेऽनतकेऽन घेऽघेऽघेऽधिंनाकिटतक ।
०
तककिटतातकिटधिकिट किटतकतकधाऽनतकिट ।
३
धिकिटकिटतकतकधाऽन तकिटधितिटकिटतकतक । धीं
४ x

४.६.१६ ''तिधारी गत ताल - एकताल

धेनधेन धेनधगि । नधगिन धगिनत ।
x ०
किटतकि टतकित । धेनगिन धेनगिन ।
२ ०
धेनगिन नकधेन । नकधेन नकधेन ।
३ ४
तकतक तकतेन । तेनतेन तकिटत ।
x ०
किटतकि टधा तिरकिट । धाऽतिरकिटधाऽ तिरकिट धा ।
२ ०
नधगिन धगिनधि । नकधिन कधिनक । धीं'' ८०
३ ४ x

४.६.१७ पंजाबी गत ताल - त्रिताल

डॉ. चिरायू भोळेजी के प्रबंध से डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धाऽनकतक धिनकतकत गेगेतिटकिट धाऽनधाऽऽ ।
x
धिरधिरकिट तकिटतकिट धेतधेतत्रक धेततिंनाकिटतक ।
२
धाऽकिटतक तकिटधिकिट गिडनगतक धाऽनतकिट ।
०
धिकिटगिडन गतकटधाऽन तकिटधिकिट गिडनगतक । धा
३ x

४.६.१८ गत ताल - त्रिताल

कऽत धेतेटे कतगदिगन धातिरकिटधेतेटे कतगदिगन ।
x
धाऽतीऽधाऽ गदींऽनाऽड धातिरकिटधेतेटे कतगदिगन ।
२
तकतकतेन किडनगतेन धातिरकिटधेतेटे कतगदिगन ।
०
धाऽतीऽधाऽ गदींऽनाऽड धातिरकिटधेतेटे कतगदिगन। धा'' ८१
३ x

४.६.१९ दुपल्ली गत ताल - त्रिताल

डॉ. चिरायू भोळेजी के प्रबंध से डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धाऽकि टतक तकीट धिकिट ।
x
क्डधेऽ ताऽन धाऽदीं ऽताऽक्क ।
२
धिंऽन डाऽन नागेन नागेन ।
०
तकीट तकीट धिटत गेऽन ।
३
क्डधेति टकता गदिग नधाऽ ।
x
दिऽघें ऽऽऽ तऽधा ऽकिट ।
२
धाऽदि ऽघेऽ ऽऽत ऽधाऽ ।
०
किटधा ऽदिऽ घेंऽऽ ऽतऽ।
३
धाऽकिटतक तकिटधिकिट क्डधेऽताऽन धाऽदिंऽताऽ ।
x
घिंऽनडाऽन नागेननागेन तकीटतकीट धिटतगेऽन ।
२
क्डधेतिटकता गदिगनधाऽ दिंऽघेऽऽऽ तऽधाऽकिट ।
०

धाऽदिंऽघेऽ ऽऽतऽधाऽ किटधाऽदिंऽ घेऽऽऽऽतऽ । धा
३ x

४.६.२० चक्रदार गत ताल -झपताल

डॉ. चिरायू भोळेजी के प्रबंध से डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

धाऽकिटधा ऽनघागे । तिटतिट क्डधितिट घागेतिट ।
x २
क्डधितिट कतागेगे । तिटकता गऽदिऽ गिडनग ।
० ३
तिरकिटतकधिर किटतकधाऽ । नतिरकिटतक धिरकिटतकधा ऽनतिरकिट ।
x २
तकधिरकिटतक धाऽऽऽ । धाऽकिटधा ऽनधागे तिटतिट ।
० ३
क्डधितिट धागेतिट । क्डधितिट कतागेगे तिटकता ।
x २
गऽदिऽ गिडनग । तिरकिटतकधिर किटतकधाऽ नतिरकिटतक ।
० ३
धिरकिटतकधा ऽनतिरकिट । तकधिरकिटतक धाऽऽऽ धाऽकिटधा ।
x २
ऽनधागे तिटतिट । क्डधितिट धागेतिट क्डधितिट ।
० ३
कतागेगे तिटकता । गऽदिऽ गिडनग तिरकिटतकधिर ।
x २
किटतकधाऽ नतिरकिटतक। धिरकिटतकधा ऽनतिरकिट तकधिरकिटतक । धिं
० ३ x

पंजाब घराने में अधिकतर गतों के अन्त में तिहाई होती है।

४.६.२१ ''त्रिपल्ली गत पंजाब स्त्रोतागता यति रचना - उ. अल्लारखाँ खाँसाहब

धाऽ क्डधा तिट धात्र ।
x
कधि किट केत्र कधि ।
२
किट तक गदि गन ।
०

धाऽ तिऽ धाऽ धाऽक्ड।
३
धातिट धात्रक धिकिट केत्रक ।
x
धिकिट कतग दिगन धाऽति ।
२
धाऽधा क्डधा तिटधात्र कधिकिट ।
०
केत्रकधि किटकत गदिगन धाऽतिऽ । धा'' ८२
३ x

४.६.२२ दुहत्थी गत तिस्त्र जाति ताल - त्रिताल

डॉ. चिरायू भोळेजी के प्रबंध से डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

तकतकतकताऽतिरकिट गदिगदिगदिधाऽतिरकिट धिंनाकिटघेऽऽता किटतकधादिंताऽतिट।
x
किटतकताऽनगदीगदी गदीधाऽऽननगनगनग तिरकिटताकेऽन गदिगदिगिऽनाऽकिट।
२
तकधिरधिरकिटधाऽ नऽनगनगनगतिरकिट त्रकेऽनगदिगदि गदिंताऽकिटतकधिर।
०
धिरकिटधाऽननग नगनगतिरकिटतके ऽनगदिगदिगदिताऽ ऽकिटतकधिरधिरकिट। धा
३ x

४.६.२३ गत पंजाब घराना डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

दुंऽ	किट	तक	दुंऽ ।	किट	तक	दुंऽ	दुंऽ।
x				२			
किट	तक	धिरधिर	किटतक ।	तकी	टधा	कता	ऽन ।
०				३			
धाऽ	धाऽ	धागे	नाति ।	ऽन	धागे	नाति	ऽन ।
x				२			
धुंऽ	धुंऽ	नाना	नाना ।	किट	तक	तिरकिट	धाऽ ।
०				३			
धागे	नाति	नाधि	नधा।	गेन	नाना	तांग	डधा ।
x				२			
कत्	धिरधिर	किटतक	तकी ।	टधा	धिर	धिर	कत् । धा
०				३			x

४.६.२४ त्रिपल्ली ताल - त्रिताल श्री. स्वप्निल भिसे से प्राप्त

धाऽदीं ऽऽताऽकिट तकताऽऽऽ धिरधिरकिट ।
x
तकधिंऽऽऽ ताऽकिटतक धाऽगेऽतिऽ टऽगऽदीऽ ।
२
गऽनऽकऽ तऽधाऽतिऽ धाऽकऽतऽ धाऽतिऽधाऽ ।
०
कऽतऽधाऽ तिऽधाऽऽऽ किटतकधाऽऽऽ दींऽऽऽताऽकिट ।
३
तकताऽऽऽधिर धिरकिटतकधिंऽ ऽऽताऽकिटतक धाऽगेऽतिऽटऽ ।
x
गऽदीऽगऽनऽ कऽतऽधाऽतिऽ धाऽकऽतऽधाऽ तिऽधाऽकऽतऽ ।
२
धाऽतिऽधाऽऽऽ किटतकधाऽऽदींऽऽऽऽ
०
ताऽकिटतकताऽऽऽधिर धिरकिटतकधिंऽऽताऽ ।

किटतकधाऽगेऽतिऽटऽ गऽदीऽगऽनऽकऽतऽ
३
धाऽतिऽधाऽकऽतऽधाऽ तिऽधाऽकऽतऽधाऽतिऽ । धा
x

४.६.२५ चौपल्ली ताल - त्रिताल श्री. स्वप्निल भिसे से प्राप्त

धाऽनग तकधिन नगतक धेऽधेऽ ।
x
धेऽधिन नगतक धिटधिट धिटकत ।
२
गदीगन धाऽटधा ऽटधाऽ टकतग ।
०
दीगनधा ऽटधाऽ टधाऽट कतगदी ।
३
गनधाऽ टधाऽट धाऽऽऽ ऽऽऽधाऽन ।
x
गतकधिनन गतकधेऽधे ऽधेऽधिनन गतकधिटधि ।
२

टधिटकतग दीगनधाऽट धाऽटधाऽट कतगदीगन ।
०
धाऽटधाऽट धाऽटकतग दीगनधाऽट धाऽटधाऽऽ ।
३
ऽऽधाऽनगतक धिननगतकधेऽ धेऽधेऽधिननग तकधिटधिटधिट ।
x
कतगदीगनधाऽ टधाऽटधाऽटक तगदीनगधाऽट धाऽटधाऽटकत ।
२
गदीगनधाऽटधा ऽटधाऽऽऽऽऽ धाऽनगतकधिननगतक धेऽधेऽधेऽधिननगतक।
०
धिटधिटधिटकतगदीगन धाऽटधाऽटधाऽटकतग
३
दीगनधाऽटधाऽटधाऽट कतगदीगनधाऽटधाऽट । धा
x

४.६.२६ लाहोरी गत डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

गिनाऽ धाऽड गिनाऽ धाऽड । धागेना गेधिन धागेना गेधिन ।
x २
तकिट धाऽड तकिट धाऽड । तकधि नतक तकधि नतक।
० ३
तकत कनड नडत कतक । तेटेते टेकत कतगि दिंगिदिं ।
x २
घेघेदिं ऽदिंऽ घेघेदिं ऽदिंऽ । घेतिरकिट तकतेत् घेतिरकिट तकतेत् ।
० ३
किनाऽ ताऽड किनाऽ ताऽड । ताकेना केतिन ताकेना केतिन ।
x २
तकिट ताऽड तकिट ताऽड । तकति नतक तकति नतक ।
० ३
तकत कनड नडत कतक । तेटेते टेकत कतगि दिंगिदिं ।
x २
घेघेदिं ऽदिंऽ घेघेदिं ऽदिंऽ । घेतिरकिट तकतेत्ऽ घेतिरकिट तकत्ऽ । धा
० ३ x

४.६.२७ चारबाग गत डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से प्राप्त

गिनधाऽ गिनधाऽ गिनधाऽ गिनधाऽ ।
x
धाडागिन धाडागिन धाडागिन धाडागिन ।
२
धाऽगिन धाऽगिन धाऽगिन धाऽगिन ।
०
दिनतक दिनतक दिनतक दिनतक ।
३
तकदिन तकदिन तकदिन तकदिन ।
x
तकतक तकतक नडनड नडनड ।
२
तिरकिटतक तिरकिटतक तिरकिटतक तिरकिटतक ।
०
धाऽगिन धाऽगिन धाऽगिन धाऽगिन ।
३
किनताऽ किनताऽ किनताऽ किनताऽ ।
x
ताडाकिन ताडाकिन ताडाकिन ताडाकिन।
२
ताऽकिन ताऽकिन ताऽकिन ताऽकिन ।
०
तिनतक तिनतक तिनतक तिनतक ।
३
तकतिन तकतिन तकतिन तकतिन ।
x
तकतक तकतक नडनड नडनड ।
२
तिरकिटतक तिरकिटतक तिरकिटतक तिरकिटतक ।
०
धाऽगिन धाऽगिन धाऽगिन धाऽगिन । धा
३ x

इस अध्याय में 'घराना' संकल्पना, तबले के छह घरानें, बाज, विभिन्न प्रकार की सुंदर गतें, हर एक घराने की विशेषताएँ इनका विस्तृत विवेचन एवं इनमें से कुछ बन्दिशों का विश्लेषण देने का महत्त्वपूर्ण प्रयास शोधकर्ती द्वारा किया गया है।

पाद-टिप्पणियाँ

१ पं. सुधीर माईणकर; तबला-वादन कला और शास्त्र; प्रकाशक - अ. भा. गांधर्व महाविद्यालय मंडल मिरज; पृष्ठ क्र. २१२

२ पं. आमोद दंडगे; सर्वांगीण तबला; प्रकाशक - भैरव प्रकाशन कोल्हापूर; पृष्ठ क्र. ५५

३ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. २८१

४ पं. हिमांशु महंत के साथ हुए साक्षात्कार दि. १९-१२-२०१९ से

५ डॉ. शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी; तबला विशारद; प्रकाशक-कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्युटर्स नई दिल्ली; पृष्ठ क्र. ७

६ डॉ. आबान मिस्त्री; पखावज और तबला के घरानें एवं परम्परायें; प्रकाशक - स्वर साधना समिति मुम्बई; पृष्ठ क्र. १३२

७ पं. हिमांशु महंत के साथ हुए साक्षात्कार दि. १९-१२-२०१९ से

८ पं. आमोद दंडगे के साथ हुए साक्षात्कार दि. २१-०३-२०१८ से

९ पं. नंदकिशोर दाते के साथ हुए साक्षात्कार दि. १९-१२-२०१९ से

१० डॉ. सुदर्शन राम; तबले के घराने, वादन शैलियाँ एवं बंदिशे; प्रकाशक - कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्युटर्स नई दिल्ली; पृष्ठ क्र. ६९

११ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ६९

१२ पं. आमोद दंडगे; परिक्षार्थ तबला : विशारद; प्रकाशक - भैरव प्रकाशन कोल्हापूर; पृष्ठ क्र. ९०

१३ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ९१

१४ डॉ. केदार मुकादम; शोध प्रबन्ध; पृष्ठ क्र. २०१

१५ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ९३

१६ पं. हिमांशु महंत के साथ हुए साक्षात्कार दि. १९-१२-२०१९ से

१७ पं. आमोद दंडगे के साथ हुए साक्षात्कार दि. २१-०३-२०१८ से

१८ डॉ. आबान ई. मिस्त्री; तबले की बन्दिशें; प्रकाशक -संगीत सदन प्रकाशन इलाहाबाद; पृष्ठ क्र. १७४

१९ डॉ. आबान मिस्त्री; पखावज और तबला के घरानें एवं परम्परायें; प्रकाशक - स्वर साधना समिति मुम्बई; पृष्ठ क्र. १५४

२० डॉ. आबान ई. मिस्त्री; तबले की बन्दिशें; प्रकाशक - संगीत सदन प्रकाशन इलाहाबाद; पृष्ठ क्र. १७८

२१ डॉ. आबान ई. मिस्त्री; तबले की बन्दिशें; प्रकाशक -संगीत सदन प्रकाशन इलाहाबाद; पृष्ठ क्र. १७५

२२ डॉ. आबान मिस्त्री; पखावज और तबला के घरानें एवं परम्परायें; प्रकाशक - स्वर साधना समिति मुम्बई; पृष्ठ क्र. १५४

२३ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. ३३५

२४ डॉ. आबान मिस्त्री; पखावज और तबला के घरानें एवं परम्परायें; प्रकाशक - स्वर साधना समिति मुम्बई; पृष्ठ क्र. १५३

२५ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. ३३६

२६ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ८०

२७ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. १७३

२८ डॉ. केदार मुकादम से १८-०९-२०२०

२९ पं. हिमांशु महंत के साथ हुए साक्षात्कार दि. १९-१२-२०१९ से

३० डॉ. श्रीमती योगमाया शुक्ल; तबले का उद्‌गम, विकास और वादन शैलियाँ; प्रकाशक - हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली; पृष्ठ क्र. १९१, १९२

३१ डॉ. आबान मिस्त्री; पखावज और तबला के घरानें एवं परम्परायें; प्रकाशक - स्वर साधना समिति मुम्बई; पृष्ठ क्र. १५९

३२ पं. हिमांशु महंत के साथ हुए साक्षात्कार दि. १९-१२-२०१९ से

३३ पं. हिमांशु महंत के साथ हुए साक्षात्कार दि. १९-१२-२०१९ से

३४ पं. अरविंद मुळगांवकर; इजाज़त; प्रकाशक - अभिनंदन प्रकाशन कोल्हापूर; पृष्ठ क्र. २२०

३५ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ३३

३६ पं. आमोद दंडगे के साथ हुए साक्षात्कार दि. २१-०३-२०१८ से

३७ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ३७

३८ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ५५

३९ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. १६३

४० डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ४९

४१ पं. आमोद दंडगे के साथ हुए साक्षात्कार दि. २१-०३-२०१८ से

४२ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ३३

४३ पं. अरविंद मुळगांवकर; इजाज़त; प्रकाशक - अभिनंदन प्रकाशन कोल्हापूर; पृष्ठ क्र. २२०

४४ डॉ. आबान ई. मिस्त्री; तबले की बन्दिशें; प्रकाशक -संगीत सदन प्रकाशन इलाहाबाद; पृष्ठ क्र. १६६

४५ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. १६५

४६ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ५१

४७ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. २२

४८ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ५१

४९ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. ३९८

५० डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ४७

५१ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. १९

५२ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ६४

५३ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. ३५२

५४ पं. भाई गायतोंडे के साथ हुए साक्षात्कार दि.१५-०३-२०१९ से

५५ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. १६९

५६ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. १६९

५७ पं. विजयशंकर मिश्र; तबला पुराण; प्रकाशक - कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्युटर्स नई दिल्ली; ISBN 978-81-7391-721-3; पृष्ठ क्र. ३४

५८ पं. अरविंद मुळगांवकर; आठवणींचा डोह; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 81-7185-886-4; पृष्ठ क्र. १७३

५९ पं. अरविंद मुळगांवकर; आठवणींचा डोह; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 81-7185-886-4; पृष्ठ क्र. १७४

६० पं. अरविंद मुळगांवकर; आठवणींचा डोह; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 81-7185-886-4; पृष्ठ क्र. १७५

६१ पं. हिमांशु महंत के साथ हुए साक्षात्कार दि. १९-१२-२०१९ से

६२ पं. हिमांशु महंत के साथ हुए साक्षात्कार दि. १९-१२-२०१९ से

६३ पं. हिमांशु महंत के साथ हुए साक्षात्कार दि. १९-१२-२०१९ से

६४ पं. हिमांशु महंत के साथ हुए साक्षात्कार दि. १९-१२-२०१९ से

६५ पं. हिमांशु महंत के साथ हुए साक्षात्कार दि. १९-१२-२०१९ से

६६ पं. हिमांशु महंत के साथ हुए साक्षात्कार दि. १९-१२-२०१९ से

६७ पं. हिमांशु महंत के साथ हुए साक्षात्कार दि. १९-१२-२०१९ से

६८ पं. आमोद दंडगे के साथ हुए साक्षात्कार दि. २१-०३-२०१८ से

६९ डॉ. शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी; तबला विशारद; प्रकाशक-कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्युटर्स नई दिल्ली; पृष्ठ क्र. १५०

७० डॉ. शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी; तबला विशारद; प्रकाशक-कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्युटर्स नई दिल्ली; पृष्ठ क्र. १५३

७१ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ८०

७२ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ८०

७३ इंटरनेट से

७४ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ४८

७५ पं. अरविंद मुळगांवकर; तबला; प्रकाशक - पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई; ISBN 978-81-7185-526-1; पृष्ठ क्र. ४०२

७६ पं. आमोद दंडगे के साथ हुए साक्षात्कार दि. २१-०३-२०१८ से

७७ पं. आमोद दंडगे के साथ हुए साक्षात्कार दि. २१-०३-२०१८ से

७८ पं. अरविंद मुळगांवकर; इजाज़त; प्रकाशक - अभिनंदन प्रकाशन कोल्हापूर; पृष्ठ क्र. २२६

७९ डॉ. शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी; तबला विशारद; प्रकाशक-कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्युटर्स नई दिल्ली; पृष्ठ क्र. ३४

८० पं. विजयशंकर मिश्र; TABLA Rare Compositions of The Great Masters; प्रकाशक - कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्युटर्स नई दिल्ली; पृष्ठ क्र. ३६

८१ पं. विजयशंकर मिश्र; तबला पुराण; प्रकाशक - कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्युटर्स नई दिल्ली; ISBN 978-81-7391-721-3; पृष्ठ क्र. ५४

८२ डॉ. गौरांग भावसार; बंदिश-ए-तिनताल; प्रकाशक - ASCENT PUBLICATION MODASA; ISBN 978-81-325632-0-6; पृष्ठ क्र. ४५